चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
6

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

तन्मय

प्रेषिका :
ताराभणि पारीक, रतनगढ़

नीम टूथ पेष्ट

की विशेषतायें...

भारतीय नीम के गुणों से भली भांति परिचित हैं, व यही कारण है कि प्राचीन काल से नीम के दातून का प्रचलन होता आ रहा है. नीम के दातून में जो जो रोग विरोधी, कृमिनाशक और मसूड़ों को बल देने वाले प्राकृतिक द्रव्य हैं, वे सब इस पेष्ट में सुरक्षित हैं. अलावा इस के आधुनिक दन्त-स्वास्थ्य शास्त्र में पायोरिया, और मुंह की दुर्गंध आदि को रोकने के लिए जो जो उपयोगी मुख्य रासायनिक द्रव्य बताए गए हैं, वे सब इस में सम्मिलित हैं. इस नीम टूथ पेष्ट के व्यवहार से दांत मोती की भांति चमकदार तो हो ही जाते हैं, इस के अतिरिक्त दांत की व्याधियों से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है. रोज सुबह तथा सोने के पूर्व नीम पेष्ट का व्यवहार कीजिए. इसका अपूर्व लाभ आप स्वयं अनुभव करने लगेंगे. सर्वत्र प्राप्त है.

शाखाएं:-

दिल्ली-२४,-दरियागंज, बम्बई-प्रिंसेस स्ट्रीट देवकरण मैनसंस,

मद्रास-५/-१४८ ब्राडवे, पटना-गोविन्द मित्र रोड,

नागपूर-सितलवाडी अभ्यंकर रोड, रांची-मेनरोड.

चन्दामामा

विषय-सूची

इनके अलावा

मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर चित्र और कई प्रकार के तमाशे हैं।

ग्राहकों को एक ज़रूरी सूचना

*

१. ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न हो उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकता।

२. पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते के साथ सूचना देनी चाहिए।

३. प्रति नहीं पाई तो १०-वीं के पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद को आने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

—व्यवस्थापक, 'चन्दामामा'

कॅटेली चम्पा
केश तैल
KATELICHAMPA
HAIR OIL
सच्चे फूलों की गन्ध
और केश शोभा के लिये
सर्वोत्तम
वीर-बच्चा
बच्चों के लिये सर्वोत्तम पुष्टई
दुबले पतले बच्चों को मोटा ताजा
और नीरोग रखने के लिये
VEER-BACHHA
A TONIC FOR CHILDREN
बिडला लेबोरेटरीज
कलकत्ता

लोजंग, पिपरमेंट, टाफी चाकलेट आदि जिन्हें आपके बच्चे पसंद करते हैं।

M. A. P. INDUSTRIES
TONDIARPET : MADRAS-21

---

२० वर्षों से बच्चों के रोगों में मशहूर

बाल-साथी

सम्पूर्ण आयुर्वेदिक पद्धति से बनाई हुई—बच्चों के रोगों में तथा चिम्ब-रोग, ऐंठन, ताप (बुखार) खाँसी, मरोड़, हरे दस्त, दस्तों का न होना, पेट में दर्द, फेफड़े की सूजन, दाँत निकलते समय की पीड़ा आदि को आश्चर्य-रूप से शर्तिया आराम करता है। मूल्य १) एक डिब्बी का। सब दवावाले बेचते हैं। लिखिए—वैद्य जगन्नाथ, बराथ आफिस, नडियाद, गुजरात। यू. पी. सोल एजण्ट:—श्री केमीकल्स, १३३१, कटरा खुशालराय, दिल्ली।

चन्दामामा

संचालक :: चक्रपाणी

वर्ष 4 :: अंक 6

फरवरी 1953

हमें यह जान कर बहुत खुशी हुई कि पाठकों को हमारे नए स्तंभ बहुत पसन्द आए। कुछ पाठकों ने हमें सुझाया कि पत्रोत्तरों के लिए भी कोई स्तंभ शुरू किया जाय। लेकिन ऐसा कोई भी स्तंभ शुरू करने में बहुत सी कठिनाइयां हैं। सभी प्रश्नों का उत्तर देना तो असंभव ही होगा। क्योंकि ऐसा करने के लिए चन्दामामा में जितने पृष्ठ हैं वे भी काफी नहीं होंगे। जिन भाइयों को उत्तर नहीं मिल सकेंगे वे नाराज हो जाएंगे। कुछ भाइयों ने यह सुझाया कि चन्दामामा शब्द-पहेली के हल के लिए पुरस्कार रखा जाय। लेकिन कुछ कारणों से यह भी अभी हमें उचित नहीं जान पड़ता। हां, पाठकों के वे सुझाव, जिन्हें कार्य-रूप देने में ज्यादा कठिनाइयां नहीं, हम जरूर मानेंगे। इससे चन्दामामा की आकर्षकता भी अवश्य बढ़ेगी। खुशी की बात है कि बहुत से पाठकों ने हमारा नया धारावाही 'राज-मुकुट' पसन्द किया। अगले अंक से पाठक चित्रों में भी कुछ विशेषता पाएंगे। आशा है कि वे हमें उनके बारे में भला-बुरा जो कुछ लिखना हो, जरूर लिखेंगे।

भींगी बिल्लियाँ
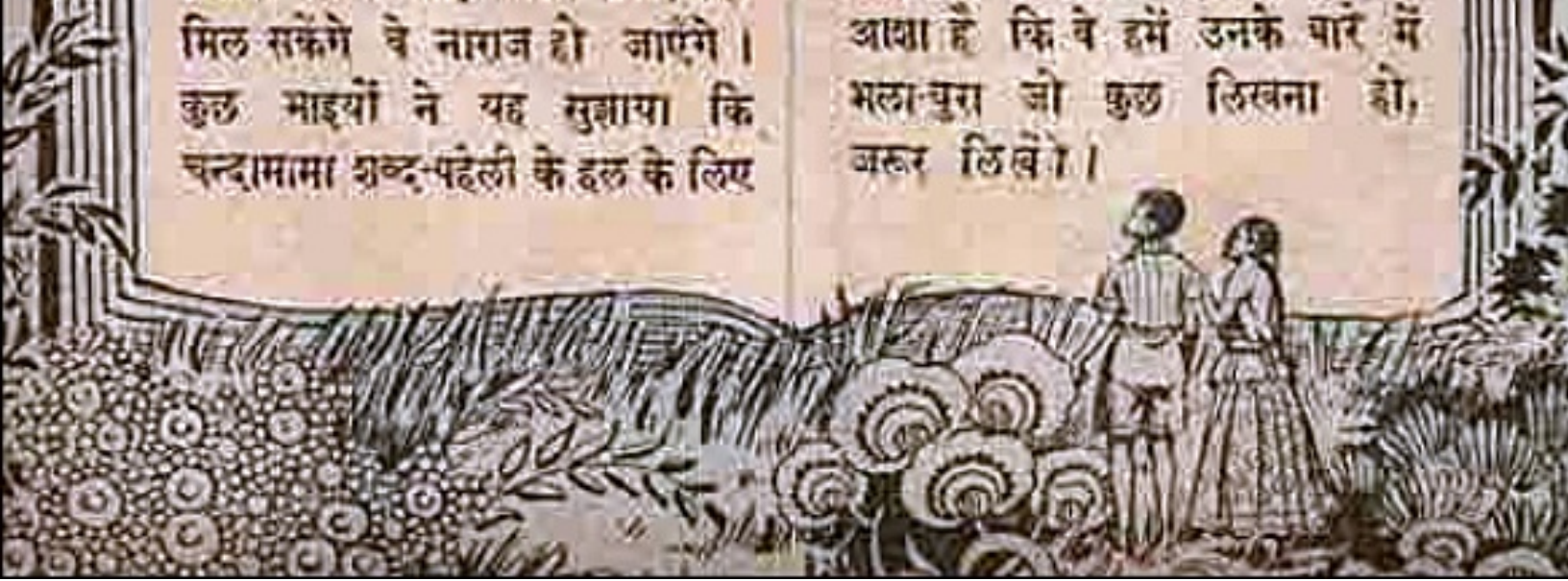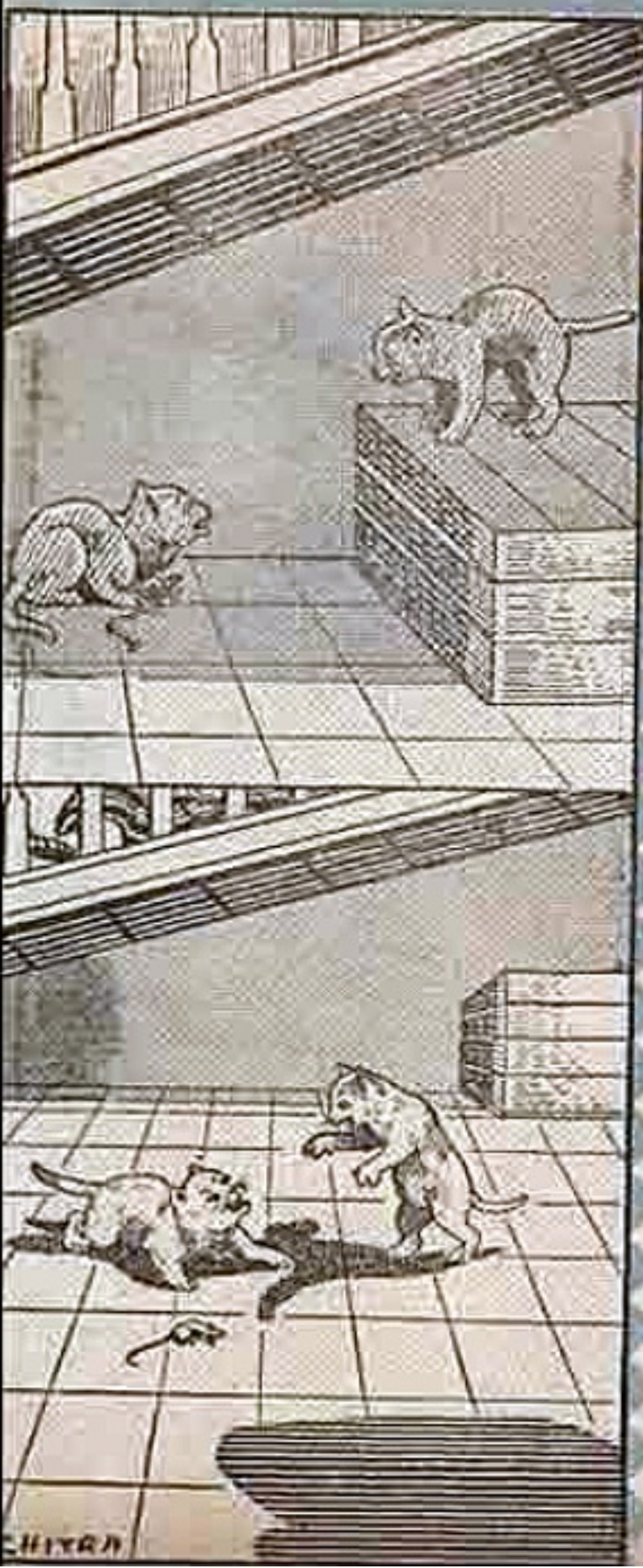
चलती वायु प्रबल तूफानी,
मूसल-धार बरसता पानी।
बन्द किवाड़, सभी सोए थे,
बच्चे भी भूले शैतानी।

प्रबल वायु के झोंके खा कर,
झूले सा झूलता एक घर।
घर में एक खाट पर सोती
घर वाली सब होश भुला कर।

इतने में झगड़ने लगे दो
बिल्ली के बच्चे, घर में जो
मुद्दत से हिल-मिल रहते थे;
किन्तु आज पकड़ा चूहे को।

पकड़ा उसे एक ने पहले;
पर चूहे मिलते हैं विरले!
आ धमका इसलिए दूसरा,
सोचा—शायद मतलब निकले!

पल में दोनों लगे झगड़ने,
लगे खूब आपस में लड़ने,
हाथा-पाई की नौबत भी
आई; दोनों उछले भिड़ने!

बोला एक—'अरे, चूहा यह
मैंने पकड़ा: मेरा है यह!'
कहा दूसरे ने—'तेरा यह
अत्याचार मुझे है दुस्सह!'

पहला गुस्से से गुर्राया;
बोला—'तेरा सिर चकराया!'
कहा दूसरे ने—'मैं तुझ से
बोल, न वक्त करूँगा ज़ाया!'

बस, दोनों पैंतरे बदल कर,
लगे झपटने उछल-उछल कर
एक दूसरे पर, गुर्रा कर
उठा लिया सारा घर सिर पर!

उधर मिला चूहे को मौका।
भागा झट, न किसी ने रोका।
इधर जगी घर वाली सुन कर
शोर भयंकर उन दोनों का।

कान पकड़, दोनों को बाहर
फेंक दिया, फिर द्वार बन्द कर
जिस से वे न आ सकें अन्दर,
सुख से सोई रहीं रात भर।

ठण्ड कड़ाके की थी बाहर,
हवा कँपाती तन को थर थर।
बिल्ली के बच्चे शरारती,
पछताए अब सिर धुन-धुन कर।

द्वार खुले फिर, भोर हुआ जब
भींगी बिल्ली बन लौटे तब!
बच्चो! कहो, फूट का होता
फल इस जगती में अच्छा कब?

बैरागी

मुख-चित्र

जब युधिष्ठिर ने राजसूय-यज्ञ करने की ठानी, तो भगवान कृष्ण भीम और अर्जुन को साथ लेकर दिग्विजय कराने निकले। इन तीनों को देखते ही सब राजा सिर झुकाने लगे। अंत में ये तीनों मगध-देश पहुँचे। मगध-देश का राजा था जरा-संध जो कृष्ण का पुराना वैरी था। भगवान भीम और अर्जुन के साथ उसके पास गए और बोले—'राजन्! हम दूर देश से आए हैं। तुम्हारे अतिथि हैं। हमने सुना है कि तुम अतिथि का सम्मान करने में सानी नहीं रखते। हम तुम से कुछ माँगने आए हैं। क्या तुम हमारी इच्छा पूरी नहीं करोगे?'

'बोलो, क्या चाहते हो? हिचकिचाओ नहीं! जरासंध कभी अपने वचन से नहीं टला।' मूर्ख जरासंध ने गर्व के साथ कहा। तब कृष्ण बोले—'अच्छा, हम चाहते हैं कि तुम हम तीनों में किसी को चुन लो और द्वंद-युद्ध करके जीतो!'

तब जरासंध ने उत्तर दिया—'कृष्ण! तुम ने मथुरा से भाग कर द्वारका में सिर छुपा लिया। तुम भगोड़े हो और अर्जुन तो मुझ से उमर में छोटा है। अब बचा भीम। हाँ, मैं उससे युद्ध कर सकता हूँ!' तुरन्त दोनों में द्वंद-युद्ध निश्चित हुआ। दोनों अपनी-अपनी गदा लेकर नगर के बाहर मैदान में लड़ने लगे। उनके गदाघातों से सारा संसार गूँजने लगा। गदा-युद्ध में दोनों समान ठहरे। इसलिए थोड़ी देर बाद गदाएँ दूर फेंक कर गुँथ गए और मल्ल-युद्ध करने लगे।

भगवान जरासंध की जन्म-कहानी जानते थे। उन्हें मालूम था कि जरासंध दो हिस्सों में चिर कर कूड़े पर फेंक दिया गया था। तब जरा नाम की राक्षसी ने दोनों को जोड़ कर उसे जीवन-दान दिया। इस तरह उसका नाम ही जरासंध पड़ा। इसलिए उन्होंने एक तिनका उठाया और उसे चीर कर भीम को इशारा किया। भीम भगवान का इशारा समझ गया। उसने अजेय जरासंध का एक पैर, अपने पैर से दबा रखा और दूसरा पैर हाथ से पकड़ कर उसे दो हिस्सों में चीर डाला। इस तरह जन्म का भेद खुल जाने से जरासंध की मौत हुई और सब लोग खुशियाँ मनाने लगे। कृष्ण और अर्जुन ने भीम को बारी-बारी से गले लगा कर प्रशंसा की।

बंदरों की सजा

एक जङ्गल था जिस में तरह तरह के जानवर रहते थे। वे सभी बड़े प्रेम से आपस में हिल-मिल कर रहते थे। एक-दूसरे के प्रति किसी तरह का भेद-भाव न रखते थे।

एक बार गरमी के दिनों में जब सारा संसार धूप के मारे बेहाल था, एक खरगोश अपनी झाड़ी से बाहर आया। अपने अगले पंजे से एक बार मुँह पोंछ कर, सूखे ओंठों पर जीभ फेर कर, जब उसने चारों ओर निगाह दौड़ाई तो चार बन्दर, जो गरमी से बहुत परेशान मालूम होते थे, दिखाई दिए।

खरगोश और बन्दरों में 'राम-राम' हो गया। कुशल पूछने के बाद सभी एक पेड़ की छाँह में बैठ गए और बड़ी देर तक गप-शप होती रही।

अन्त में जाते वक्त बन्दरों ने खरगोश से कहा—'भाई खरगोश! हमारे यहाँ हाँडी भर बढ़ियाँ शहद पड़ा हुआ है। हमारे साथ क्यों नहीं आ जाते! मधु का सेवन कर लोगे तो गरमी की परेशानी दूर हो जाएगी। तुम भी आओ न हमारे साथ!' उन्होंने बड़े प्रेम से उसे बुलाया।

खरगोश ने बन्दरों की बातों पर विश्वास कर लिया। वह उनके साथ चला गया। वे सब चलते-चलते एक बहुत पुराने शमी के पेड़ के पास आ पहुँचे।

इसी पेड़ पर वे बन्दर रहा करते थे। उसकी डालें तो क्या, छोटी छोटी टहनी तक उनकी जानी-पहचानी थी। पेड़ के नीचे पहुँचते ही बन्दर उछल कर ऊपर जा चढ़े। वहाँ दो डालों के बीच शहद से भरी हाँडी रखी हुई थी। चारों बन्दर आराम से बैठ गए और हाँडी से शहद निकाल कर मजे से खाने लगे।

यह देख कर खरगोश के मुँह से लार टपकने लगी। गरमी की वजह से उसका

मुँह सूख गया था। शहद की मिठास का अनुमान करके वह बहुत अधीर होने लगा। वह बेचारा आस लगाए बैठा रहा कि बन्दर नीचे उतरेंगे और उसे भी थोड़ा शहद चखने को देंगे। लेकिन बड़ी देर तक बैठे रहने पर भी उसकी आशा पूरी नहीं हुई।

आखिर एक बन्दर ने उस से कहा—'अरे खरगोश भैया! खड़े खड़े क्या देखते हो! आ जाओ न पेड़ पर तुम भी! वाह भैया! वाह! यह शहद क्या है, अमृत है अमृत! इसे तो देवताओं का अमृत ही समझ लो!' यों वह जीभ चटका कर उसे और भी ललचाने लगा।

अब बेचारे खरगोश की समझ में आ गया कि बन्दर उसका मखौल उड़ा रहे हैं। उसने मन में सोचा—'अच्छा भैया! ऐसी बेईमानी! इसकी कसर न निकाल ली तो मेरा नाम खरगोश नहीं!' यह सोच कर वह वहाँ से चला गया।

बस, उस दिन से खरगोश बन्दरों से बदला लेने की फ़िराक में लग गया। वह हाथ धोकर उनके पीछे पड़ गया। उसने सोचा—'इन्हें ऐसी सजा देनी चाहिए, जो बहुत दिन तक याद रहे।' कुछ दिन तक छुपे छुपे पीछा करके उसने उनके बारे में सारी बातें जान लीं। उसे पता लग गया कि वे कहाँ-कहाँ और किस-किस रास्ते से आते-जाते हैं। उस रास्ते की बगल में एक झाड़ी में उसने अपना अड्डा जमाया।

एक दिन खरगोश ने अपना फन्दा फैलाया। रास्ते में एक गड्ढा था। उसने उस गड्ढे में सूखे पत्ते, टहनियाँ वगैरह बिछा दीं और आग लगा दी। बस, वहाँ बहुत सी राख जमा हो गई। फिर खरगोश ने उस गड्ढे को घास-फूस और सूखे पत्तों से ढँक दिया।

दूसरे दिन वह बन्दरों के यहाँ गया और उन्हें उस जगह बुला लाया। उसने कहा—

'बन्दर-भाइयो ! मैं आप लोगों के सम्मान में एक दावत देना चाहता हूँ। अपनी झाड़ी में सारा इन्तजाम कर आया हूँ। बस, आप लोगों के आने भर की देर है। इसलिए जल्दी आइए ! देर न कीजिए।'

मूरख बन्दरों ने खरगोश की बातों पर विश्वास कर लिया। उन्होंने सोचा—'इस बेवकूफ खरगोश को पिछली बातें क्या याद होंगी !' इसलिए वे उसके पीछे पीछे चले। थोड़ी दूर जाने के बाद खरगोश ने उन्हें नदी का रास्ता दिखाया और कहा—'जाकर पहले नहा आओ सभी !' बन्दर दावत की कल्पना करके खुशी-खुशी नहाने चले।

उसी रास्ते में वह गढ़ा था, जिस का मुँह खरगोश ने घास-फूस से ढँक रखा था। वहाँ जाते ही चारों बन्दर धड़ाम से गढ़े में जा गिरे। सारे बदन में कालिख लग गई। देखने में काले देव जैसे लगने लगे।

बेचारे बन्दर 'हाय-हाय' करते नदी में नहाने गए। लेकिन भींगने पर कालिख और भी चिपक गई। बेवकूफ बन्दर बहुत बौखला गए। उन्होंने कई बार नहाया-धोया, रगड़ रगड़ कर स्नान किया। लेकिन वह कालिख दूर न हुई। लाचार होकर वे उसी तरह खरगोश के पास गए। खरगोश ने उन्हें देख कर बड़े प्रेम से बुलाया—'आओ ! भैया बन्दरो ! देर न करो ! मैं तो तुम्हीं लोगों की राह देख रहा था ! वाह ! ये अंगूर कितने मीठे हैं !' यह कह कर वह एक डलिया से अंगूर निकाल कर खाने और बन्दरों को दिखा-दिखा कर ललचाने लगा। तब कहीं बन्दरों की समझ में आया कि खरगोश उन्हें बेवकूफ बना रहा है। लेकिन करते क्या ! सिर धुनने और पछताने लगे कि उन्होंने उसे उस दिन नाहक चकमा दिया था ! सच है,

'जैसी करनी वैसी भरनी।'

परियों के दीप

★

पावस की रजनी में परियाँ
जब दरबार लगाती हैं;
वहाँ उजाला करने को वे
जुगनू-दीप सजाती हैं।

ओस बिछी मरकत-शय्या पर
जुगनू ज्योत जगाते हैं।
अति अमूल्य अगणित मणियों से
निशि का चीर सजाते हैं।

काला हो मखमली अँधेरा,
जिस पर जुगनू शोभ रहे;
भला, बता, वह दृश्य देखने
का किसको न प्रलोभ रहे!

बच्चो! सम्हल सम्हल कर चलना,
वहाँ, जहाँ जुगनू-गण हों;
क्योंकि निकट ही कहीं नाचती
होंगी परियाँ सुध-बुध खो।

प्रश्न-शृंखला

नीचे कुछ संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों के अनुसार सही उत्तर पाने पर हरेक उत्तर के अंतिम दो अक्षर बाद के उत्तर के पहले दो अक्षर होंगे।

१. भारत का एक प्रान्त, जहाँ जङ्गल ज्यादा हैं, वर्षा ज्यादा होती है। उस प्रान्त की भाषा बंगला से मिलती-जुलती है।

२. चार वेदों में से एक, जो संगीत का वेद माना जाता है। समझा-बुझा कर काम निकालने को भी कहते हैं यह।

३. एक महा-ऋषि जो कुरुवंशी थे। इन्होंने महा-भारत लिखा था।

४. इसका माने होता है बहुत ज्यादा आसक्ति; एक तरह से व्यसन।

उत्तर देने में सफल न हो सके तो जवाब के लिए ४६-वाँ पृष्ठ देखो।

2

ऐसे समय एक स्त्री का कण्ठस्वर सुनाई दिया—'बेटा! कौन तुम्हारा बलिदान करने जा रहा है!' सब लोग सन्न रह गए। राजा जो शोक के मारे सिर नीचा किए खड़ा था, चारों ओर देखने लगा।

तब मन्दाकिनी चिल्लाई—'पहले उस अभागे के सिर से मुकुट उतार लो!' पुरोहित ने जो निकट ही खड़ा था, काँपते हुए हाथों से मुकुट उतारना चाहा। उसी समय फिर स्त्री-कण्ठ से ये हृदय-विदारक शब्द सुनाए दिए—'यह क्या! बेटा! आज तेरी यह कैसी हालत है!' अब सब लोग सर ऊँचा कर देखने लगे। राजा और दरबारियों ने तो गंधर्व-कुमारी की आवाज पहचान ली। बड़ा कोलाहल हुआ। भगदड़ मच गई। 'राज-हंस! राज-हंस! सुनहला राज-हंस!' आदि शब्द चारों ओर से सुनाई देने लगे। लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

यह एक बहुत बड़ा सुनहला राज-हंस था। उसे देखते ही बहुत से लोग जान गए कि थोड़ी देर पहले जो पुकारें सुनाई थीं, वे इसी की थीं और यह गंधर्व-कुमारी है। लेकिन कोई नहीं जानता था कि यह कहाँ से आई और इतने दिन तक कहाँ छिपी थी।

उस हंस को देखते ही महीपाल 'माँ! माँ!' कह कर दौड़ा गया और उसके गले से लिपट गया। तुरंत मुकुट-धारी महीपाल को अपनी पीठ पर चढ़ा कर वह विचित्र हंस उड़ा और पल में ओझल हो गया! जब राज-पुरोहित ने देखा कि हाथ में आई चिड़िया

निकल गई तो चिल्लाया—'पकड़ो! मारो उसे! वह पंछी नहीं है!' लेकिन किसी से कुछ न हो सका। मंदाकिनी और उसके सेवक मुँह बाए देखते खड़े रह गए। हंस आकाश की गंभीर नीलिमा में विलीन हो गया।

यह भीषण बलिदान देखने जो जो लोग आये थे, वे सभी सोच में पड़ गए। मंदाकिनी की उतावली, राज-पुरोहित की उत्तेजना आदि बातों की याद करने पर उनकी अकलें और भी तेज़ी से काम करने लगीं। लोग एक दूसरे से पूछने लगे कि किसने यह अफवाह फैलाई थी जिसकी वजह से महीपाल का बलिदान तय हुआ! लेकिन किसी को इस सवाल का ठीक ठीक जवाब न मिल सका। फिर भी अब सब को खुशी होने लगी कि उस मासूम बच्चे की जान बच गई।

इतने में कुछ दरबारियों ने राजा से कुछ कहा। तुरन्त राजा ने राज-पुरोहित को पकड़ लेने का हुक्म दिया। यह बात मालूम होते ही मन्दाकिनी वहाँ से भागी और रनवास में जा घुसी।

मन्दाकिनी का पिता किरात-राज भी वहीं खड़ा था। यह सब गड़बड़ी देखते ही वह चौंक गया कि दाल में कुछ काला है। इसलिए वह भी मन्दाकिनी के पीछे-पीछे दौड़ा। रनवास में जाकर उसने देखा कि उसकी बेटी सेज पर पड़ी तड़प रही है।

तब उसने नज़दीक जाकर माथे पर हाथ फेरते हुए समझाया—'बिटिया! सोच न कर! जो हो गया सो हो गया। यह बेचारा बच गया; यह भी एक तरह से अच्छा ही हुआ।' यों वह और भी कुछ कहने लगा। उस बेचारे को क्या मालूम था कि उसकी अभागी बिटियाने ज़हर खा लिया है!

इतने में मन्दाकिनी कराहती हुई बोली—'पिताजी! माफ कीजिए! आज तक सब लोग मेरी बड़ाई ही करते थे। मैं नहीं

चाहती कि मेरे उस सुयश पर कलंक लग जाए। इसलिए मैं ने जहर खा लिया है। राज-पुरोहित तो पकड़े ही गए। कल जब इन्साफ़ होगा तो सच्ची बात सब को मालूम हो जायगी।' इतना कहते-कहते उसे हिचकी आने लगी। वह कराहने और हाथ-पैर मारने लगी मानों अन्दर से अदृश्य ज्वाला की लपटें उसे भून रही हों।

बड़ी मुश्किल से वह अपने को सम्हाल कर बोली—'पिताजी! मेरे नन्हे बच्चे की देख-भाल करते रहिएगा। भैया से भी कहना कि यहीं आकर रह जाए। मेरा अन्त निकट है। मैं ज्यादा कुछ नहीं कह सकती। हाँ, यह भेद खुलने न देना! पिताजी! हाय! मेरा बच्चा! नन्हा अर्धपाल!' इतना कहते-कहते मन्दाकिनी ने प्राण छोड़ दिए।

किरात-राज रोने और चिल्लाने लगा कि उसकी बेटी ने महीपाल के कारण शोक से जान दे दी।

तब सब लोग दौड़े आए। राजा हर्षपाल भी दौड़ा आया। वह रो-रो कर कहने लगा—'हाय! मैं कैसा अभागा हूँ! हाथों-हाथ बड़ी रानी को गँवाया। तब महीपाल को देख कर संतोष किया! लेकिन इतने में यह अकाल आया और वह भी हाथ से निकल गया। फिर भी यह सोच कर संतोष हुआ कि कहीं भी हो, जिंदा तो है! लेकिन इतने में प्यारी मन्दाकिनी मुझे छोड़ कर चल दी! हाय! अब मैं क्या करूँ! मैंने कौन से घोर-पाप किए थे, जिनका यह दंड मुझे भुगतना पड़ रहा है!'

पलभर में यह बुरी खबर सारे नगर में फैल गई। सब लोग मातम मनाने लगे।

कुछ दिन बाद भरे दरबार में राज-पुरोहित के अभियोग की जाँच हुई। अभियुक्त ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने यह भी बताया कि इस कुचक्र

में सब से ज़्यादा मन्दाकिनी का हाथ था। इतना ही नहीं, उसने कहा कि राजा का ससुर किरात-राज इन कुचक्रों में बेटी को मदद देने के लिए ही इतने दिन से यहाँ रहता आया है। इस तरह राज-पुरोहित ने सोचा कि उसका दोष कुछ हलका हो जाएगा। लेकिन उसकी बातों पर किसी को विश्वास न हुआ। लोगों ने सोचा—'रानी मर गई है। इसलिए यह झूठे इलज़ाम लगा कर किसी तरह अपना दोष उनके सिर पर मढ़ने की कोशिश कर रहा है।'

राजा तो पुरोहित की बातें सुन कर आग-बबूला हो गया। उसने कहा—'रे दुष्ट! तेरे ही कारण मेरा प्यारा महीपाल मुझ से बिछुड़ गया। राज्य-लोभ से तूने ही प्रजा को भड़काया और दरबारियों को बहकाया। तेरे ही कारण मेरे राज्य में इतनी गड़बड़ी मची। मैं तुम्हें जो भी दंड दूँ थोड़ा ही होगा। लेकिन ब्राह्मण अवध्य होता है! इसलिए जाओ! तुरन्त मेरे राज से निकल जाओ। फिर कभी मुँह न दिखाना!' यों राजा ने राज-पुरोहित को देश-निकाला दे दिया। लोग उसे देख कर घृणा से मुँह फेरने लगे।

यों राजा द्वारा अपमानित होने और प्रजा द्वारा दुतकारे जाने के बाद राज-पुरोहित ने लाज से सिर नीचा कर लिया और मलाण राज छोड़ दिया। पीछे मुड़ कर देखा तक नहीं। आज तक कभी उनकी ऐसी बेइज़्ज़ती नहीं हुई थी।

उन्हें इस बात की चिंता तक नहीं थी कि उन के चले जाने के बाद परिवार की क्या हालत होगी! यह भी नहीं सूझा कि चलें, बाल-बच्चों और पत्नी को ज़रा आख़िरी बार देख लें। उन्हें तो बस, एक ही रट लगी हुई थी। वह यह कि मलाण राज की मिट्टी पर अब एक पल भी कदम न टिकाएँ। बस, उनके मन में और कोई विचार न रह गया था।

चलते चलते अन्त में वे एक घने जङ्गल में पहुँचे। थके-माँदे तो थे ही। एक पेड़ के नीचे पड़ रहे। आँखें अपने-आप मुँद गईं। बड़ी देर बाद जब नींद टूटी तो उन्हें किसी के घोड़ा दौड़ाते आने की आवाज़ सुनाई दी।

पलभर बाद एक नौजवान वहाँ आ पहुँचा। उसने राज-गुरु को देखते ही पहचान लिया और नीचे उतर कर सादर प्रणाम किया। यह किरात-राज का लड़का और मन्दाकिनी का भाई वनपाल था। राज-पुरोहित भटकते-भटकते किरात-राज्य में आ पहुँचे थे।

दूसरे ही क्षण राज-पुरोहित किरात-राज की भव्य कुटी में थे और उनकी सब तरह से सेवा-सुश्रूषा हो रही थी। राज-पुरोहित ने अपनी दुर्दशा का सारा हाल निस्संकोच सुना दिया। कुछ भी दुराव नहीं रखा।

वनपाल ने उनकी बातें गौर से सुनीं। वह बड़ा महत्त्वाकांक्षी था। उसके मन में बड़े बड़े हौसले थे। जङ्गल में राज करते करते उसका मन ऊब गया था। वह किसी विशाल देश पर शान-शौकत से राज करना चाहता था। वह चाहता था एक बड़ी सेना, जिसे देख कर दूसरे राजा लोग डरें। उसकी उमंगों के लिए जङ्गल सचमुच छोटा था।

लेकिन इतने दिनों से उसे अपनी इच्छा पूरी करने के लिए कोई चारा न सूझा। क्योंकि जङ्गल में पैदा होने और पलने के कारण वह लड़-भिड़ तो सकता था, मगर किसी बात में दिमाग लड़ाना उसके बूते के बाहर था। राजा बनने के लिए लड़-भिड़ सकना जितना जरूरी है, कूटनीति जानना भी उतना ही जरूरी है। इसलिए राज-पुरोहित की बातें सुनते ही उसने सोचा—'लो, बिल्ली के भाग से सींका टूटा।' ऐसा अच्छा सहायक उसे और कहाँ

मिलना! उसने उनको धीरज बँधाते हुए कहा—'गुरुवर! सोच न कीजिए! आप जैसे बुद्धिमान को यह शोभा नहीं देता। वीर-पुरुष कभी अपनी बीती पर सिर धुनते बैठे नहीं रहते। आइए, मेरी तलवार की धार आप की प्रखर बुद्धि का साथ देगी। आशीर्वाद दीजिए! जिस घड़ी मैं महान की राज-गद्दी पर बैठूँगा, उसी घड़ी समझ लीजिएगा कि आपके सारे संकट दूर हो गए! तब तक आप तनिक धीरज धरिए!' यह कह कर उसने राज-पुरोहित के अपमान का बदला चुकाने की शपथ ले ली।

राज-पुरोहित को बड़ी खुशी हुई। वे सोचने लगे—'मन्दाकिनी की बातों में पड़ कर मैं चौपट हो गया। किरात-राज की क्या मन्शा है, यह साफ मालूम नहीं। बड़ा ढुलमुल आदमी है। उधर नाती का मोह भी होगा उसे! हाँ, इस वनपाल का विश्वास करने में कोई हरज नहीं। क्योंकि यह राजा बनने के लिए सब कुछ करने को उतारू है! इसे राजा बनाने से मेरा भी काम निकल आएगा। बदला भी चुक जाएगा और राज में फिर से मेरी धाक जम जाएगी। ऐसा अच्छा मौका फिर नहीं मिलने का।' यह सोच कर वे बोले—'बेटा! कौन जाने, किस की तकदीर कैसी है! खैर!' फिर तो दोनों आपस में घुल-मिल कर बातें करने लगे!

* * *

महीपाल अदृश्य हो गया और मन्दाकिनी चल बसी। फिर भी अर्थपाल को देख कर राजा ने संतोष किया। अब उसे उस से दुगुनी मुहब्बत हो गई।

यों कई बरस बीत गए। हर्षपाल ने युवराज का विवाह और राज-तिलक भी किया। अब उनके दिन सुख से कटने लगे।

कुछ दिन बाद अर्धपाल के एक लड़का भी हुआ। इस से राज के सब लोग बहुत खुश हुए और कुछ दिन तक बड़ी धूम-धाम रही। बच्चे का नाम चित्र-भानु पड़ा और वह बड़े लाड़-प्यार से पाला जाने लगा।

एक दिन राजा अर्धपाल के दरबार में एक दूत आया। वह एक चिट्ठी भी ले आया जो एक सामन्त गुर्जर-राज ने राजा को लिखी थी। उस चिट्ठी का सारांश था—'भल्लाण-देश के राजवंश का यह आचार है कि राज-तिलक के समय युवराज के शीस पर 'रत्न-मुकुट' रखा जाता है। हम सामन्त लोग उस रत्न-मुकुटधारी राजा के आगे सिर झुकाते और कर चुकाते हैं। लेकिन आज 'रत्न-मुकुट' ही गायब हो गया है। अर्धपाल मुकुटहीन राजा है। उस पवित्र 'रत्न-मुकुट' के बिना जो राज-तिलक हुआ, उसका हम अनुमोदन नहीं कर सकते। जिसे राजा ही नहीं कहा जा सकता, उसे कर कैसे चुकाएँ! इसलिए जब तक अर्धपाल के सिर पर राज-मुकुट धर कर यथा-विधि राज-तिलक नहीं होगा, तब तक हम कर नहीं चुकाएँगे!'

हर्षपाल जो युवराज को राज काज सौंप कर निश्चिंत हो गया था, यह चिट्ठी सुन कर सोच में पड़ गया। 'हम इस विषय पर विचार करेंगे और अपना निश्चय सूचित करेंगे।' इतना कह कर उसने दूत को भेज दिया।

दूसरे दिन उसने अपने ससुर किरात-राज से कहा—'हमारे सामन्त सभी बहुत सीधे-सादे हैं। इतने दिन तक हमें कभी उनसे लड़ने की नौबत नहीं आई। फिर आज उन्हें यह क्या सूझी है!'

किरात-राज थोड़ी देर तक सोच-विचार कर बोला—'चिट्ठी का उत्तर दे देने से कोई फायदा नहीं। इससे तो अच्छा है कि किसी दूत को भेजें। इस हालत में हर ऐरे-गैरे पर विश्वास भी नहीं किया जा

सकता। इसलिए किसी अपने ही आदमी को दूत बना कर भेजना होगा। काम नाजुक है। इसलिए अवश्य किसी चतुर व्यक्ति को भेजना चाहिए।'

हर्षपाल को किरात-राज का कहना पसन्द आया। उसने कहा—'वनपाल के रहते किसी और को भेजने की क्या जरूरत है?' इतना कह कर उसने तक्षण वनपाल को बुला भेजा।

वनपाल के आने पर राजा ने गुर्जर-राज की चिट्ठी उसे पढ़ कर सुना दी और सब बातें समझा दीं। उसने कहा—'तुम उन लोगों को समझा देना कि कर न चुकाने का नतीजा बहुत बुरा होगा। रत्न-मुकुट-धारण एक आचार मात्र है। कर चुकाने से उसका कोई सम्बध नहीं। जो इस बहाने राजा की आज्ञा टालने की कोशिश करेंगे, वे राज-द्रोही माने जाएंगे और कड़ी सजा पाएँगे। यों उन्हें पहले समझा-बुझा देना! नहीं मानेंगे तो डरा-धमका देना।' इतना कह कर उसने अपनी अंगूठी उतार कर उसे दे दी और कहा—'हर बारह कोस पर एक राज-भवन होता है; वहाँ जाकर यह अंगूठी दिखा देना। बस, तुम्हारे लिए सारी सुविधाएँ हो जाएँगी।'

फिर किरात-राज ने भी अपने बेटे को समझाया—'बेटा! तुम राजा के काम पर जा रहे हो। एक बात अवश्य याद रखना—किसी के कान में इसकी भनक तक न हो।'

रात-दिन सफर करते हुए वनपाल आगे बढ़ चला। वह हर बारह-कोस पर राज-भवन में थोड़ी देर आराम करता और घोड़ा बदल कर आगे बढ़ता जाता।

इस तरह उसने तीन दिन तक सफ़र किया। चौथे दिन रात को बहुत थका-माँदा होने के कारण उसे लेटते ही नींद आ गई। राज-भवन में सन्नाटा था। ठीक आधी रात के वक्त—

[सशेष]

भगवान की नज़र में–

*

एक दिन की बात है; गुरु गोविन्दसिंह गद्दी पर बैठे हुए थे। उसी समय कुछ सिख सिपाही कन्हैया जी नाम के एक आदमी को पकड़ लाए। गुरु ने पूछा— 'यह कौन है? इसे तुम लोग क्यों पकड़ लाए हो?' 'गुरु जी! यह एक विश्वासघाती है जो विधर्मियों में शरीक हो गया है।' सिपाहियों ने उत्तर दिया। 'अच्छा! इसका कसूर क्या है?' गुरु जी ने पूछा। 'जब हम मुसलमानों से लड़ते हैं तो यह पीछे जाता है और दुश्मनों के घायलों को पानी पिलाता है। इस तरह इसने बहुत से मुसलमानों की जान बचाई है।' सिपाहियों ने जवाब दिया। तब गुरु ने कन्हैया जी से पूछा—'अच्छा! बोलो! तुम अपनी तरफ से क्या कहते हो?' तब कन्हैया जी ने मुसकुरा कर कहा—'जब मैं युद्ध-क्षेत्र में जाता हूं तो वहां मुझे कोई हिन्दू या मुसलमान नहीं दिखाई देते। मैं देखता हूं कि सभी आदमी हैं और खुदा के बन्दे हैं। इसलिए मैं सब की सेवा करता हूं।'

कन्हैया जी का उत्तर सुन कर गुरु को बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और बोले—'भैया! तुम्हारा कहना ठीक है। हमें मुसलमानों के ज़ुल्म से दुश्मनी है। मुसलमानों से नहीं। भगवान की नज़र में सब बराबर हैं। इसलिए तुम ने सब की समान भाव से सेवा की। यह बहुत अच्छा किया।' इतना कह कर उन्होंने घायलों की चिकित्सा के लिए कन्हैया जी को मलहम-पट्टियाँ भी दिला दीं और बड़े प्रेम से विदा किया। फिर उन्होंने उन सिपाहियों को, जो कन्हैया जी को पकड़ लाए थे, खूब फटकारा और समझाया।

गुरु गोविन्दसिंह का ऐसा उदार स्वभाव था कि वे अपने दुश्मनों के प्रति भी करुणा दिखाते थे। जो वास्तव में महान पुरुष होते हैं, वे जानते हैं कि भगवान की नज़र में सब बराबर हैं।

कहते हैं कि किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके लक्ष्मी नाम की एक सयानी लड़की थी।

किसान ने बड़ी धूम-धाम से अपनी इकलौती लड़की का ब्याह किया। जमाई भी मिला बड़ा खूबसूरत। हाँ, जरा सनकी जरूर था।

इस लड़के का नाम था 'शङ्कर'। ब्याह के कुछ ही दिन बाद शङ्कर अपनी बहू को लिवा ले जाने के लिए ससुराल आया। 'भैया! कौन सी जल्दी आ पड़ी है! कुछ दिन और रहने दो यहाँ। समय आने पर हम खुद ही उसे भेज देंगे। बीच-बीच में परब-त्योहार को तुम आते-जाते रहोगे ही!' सास-ससुर ने उसे समझाया। लेकिन जमाई ने जिद् की—'मैं यह सब नहीं जानता। साफ-साफ बताइए! आप आज उसे मेरे साथ भेजते हैं कि नहीं!'

लाचार होकर किसान ने पंडितजी को बुला भेजा और साइत देखने को कहा। पंडितजी ने पोथी-पत्रा पलट कर कहा—'नहीं भैया! आज तो नवमी है। आज कहीं आना-जाना नहीं होता। कल दशमी है। दिन अच्छा है। कल बिदा कर देना।'

किसान ने दामाद से कहा—'सुन लिया न बेटा, पंडितजी का कहना!' लेकिन जमाई को क्रोध आ गया। उसने कहा—'वाह! तो मैं अपनी ही स्त्री को नहीं ले जा सकता! नवमी हो या दशमी! मुझे क्या! कुछ भी हो; मैं आज उसे यहाँ से जरूर ले जाऊँगा। आप उसे इसी वक्त बिदा कर दीजिए।'

किसान की स्त्री को डर लगने लगा कि कहीं जमाई को क्रोध न आ जाए। उसने तुरंत कलेवा वगैरह तैयार कर दिया। आखिर रो-धोकर किसी तरह उन्होंने

चन्द्रशेखर पांडे

अपनी लाड़ली बिटिया को नवमी के दिन ही बिदा कर दिया।

*　　*　　*

हफ्ते के हर एक दिन का एक एक देवता स्वामी होता है। रविवार का देवता सूरज होता है तो सोमवार का देवता चन्द्रमा। अन्य पाँचों दिनों के भी पाँच देवता स्वामी होते हैं। इसी तरह पन्द्रहों तिथियों के पन्द्रह देवता स्वामी होते हैं। इन देवताओं को 'पुरुष' कहा जाता है।

नवमी के स्वामी देवता का नाम 'नवमी-पुरुष' होता है। इस नवमी-पुरुष की आज्ञा है कि नवमी के दिन सब लोग चैन से अपने-अपने घर में बैठे रहें; कहीं कोई आए-जाए नहीं। इसीलिए बहुत से हिंदू नवमी के दिन कोई यात्रा नहीं करते। वे मन ही मन डरते हैं कि इससे नवमी-पुरुष नाराज हो जाएँगे।

*　　*　　*

हाँ तो, जब शङ्कर ने सास-ससुर की बात न मानी और जिद करके अपनी बहू लक्ष्मी को नवमी के दिन ससुराल से छिवा चला तो नवमी-पुरुष को क्रोध आ गया। उन्होंने सोचा—'इसे एक पाठ पढ़ाना चाहिए।'

उस समय शङ्कर और उसकी पत्नी एक शहर की बगल से चले जा रहे थे। थोड़ी देर में उन्हें जोर की भूख लगी। दोनों ने एक पेड़ की छाँह में बैठ कर कलेवा किया। तब कहीं उन्हें याद आया कि लोटे में पानी नहीं है। आखिर शङ्कर लक्ष्मी से बोला—'अरी! तू यहीं बैठी रह! मैं जाता हूँ; झट कहीं से पानी ले आता हूँ।' इतना कह कर शङ्कर लोटा लेकर पानी की खोज में चला।

मौका पाकर नवमी-पुरुष ने ठीक शङ्कर का-सा रूप बना लिया और लोटे में पानी

लेकर उस जगह आया जहाँ लक्ष्मी बैठी हुई थी। फिर शङ्कर की सी आवाज़ बना कर बोला—' पानी पीकर जल्दी चल! हमें अन्धेरा होने के पहले ही अपने गाँव पहुँचना है।' लक्ष्मी ने सोचा कि सचमुच वही उसका पति है। वह पानी पीकर उसके पीछे चल दी।

थोड़ी देर बाद जब सच्चा शङ्कर लोटे में पानी भर कर लौट आया तो लक्ष्मी को पेड़ के तले न देख कर घबरा गया। जब उसने मुड़ कर अपनी नज़र चारों ओर दौड़ाई तो बड़ी दूर पर लक्ष्मी का हरा आँचल झलक गया। बगल में एक पराए मरद को देख कर बेचारे का कलेजा धक से रह गया।

तीर की तरह दौड़ा और हाँफते हुए किसी तरह जाकर उनको पकड़ पाया। ' अबे! कौन है तू! भागता है अभी कि लगा दूँ दो चार घूँसे!' उसने उस दुस्साहसी पुरुष को धमकाया।

उसकी बातें सुन कर नकली शङ्कर ने अचरज दिखाते हुए कहा—' वाह भैया! होश में हो कि नहीं! यह तुम्हारी पत्नी कब से हो गई! यह तो मेरी जोरू है। अभी मायके से ससुराल जा रही है! सास-ससुर ने बहुत समझाया—' इसे आज न ले जाओ! कल ले जाना!' लेकिन मैंने उनकी एक न सुनी और इसे तुरन्त बिदा कर देने को मजबूर किया!' इतना कह कर उसने लक्ष्मी की तरफ मुड़ कर कहा—' अच्छा जी! इस पागल से हमें क्या! जल्दी चलो; दूर जाना है।' यह कह कर वह आगे बढ़ चला।

शङ्कर को क्रोध तो आया ही; साथ ही साथ बहुत दुख भी हुआ। उसने राह रोक कर कहा—' अरी! इसके धोखे में न आ जाना! यह तो कोई लुचा, बदमाश है! ज़रा नज़र उठा कर देख! मुझे नहीं पहचान सकती! नहीं जानती कि मेरे पहुँचे पर एक तिल है! देख ले तू ही!' यह कह

कर उसने वह तिल दिखाया । लेकिन नकली शङ्कर के पहुँचे पर भी ठीक वैसा ही एक तिल था। यह देख कर लक्ष्मी दुविधा में पड़ गई।

इतने में उस नगर का राजा मन्त्री और दरबारियों के साथ घूमते हुए उधर से आ निकला। 'क्या गड़बड़ी है?' उस ने इन तीनों से पूछा कोई कुछ नहीं बोला। अंत में लक्ष्मी ने कहा—'राजन! पुराने जमाने में दमयन्ती की जो हालत हुई थी वही आज मेरी भी हो रही है। दमयन्ती को उस समय स्वयंवर-मन्डप में पाँच नल दिखाई दिए। उसी तरह आज मेरे एक ही सूरत-शकल वाले दो पति दिखाई दे रहे हैं। भला आप के सिवा इस धर्म-संकट से मुझे और कौन उबार सकता है?'

लक्ष्मी की बातें सुन कर राजा ने मन्त्री की तरफ देखा। मन्त्री ने मन में सोचा—'दमयन्ती के स्वयंवर में नल तो एक ही था! बाकी चारों देवता लोग थे। उसी तरह इन दोनों में भी एक जरूर देवता होगा। अब कौन देवता है और कौन मनुष्य, यह जानने के लिए इन दोनों की कोई ऐसी परीक्षा लेनी चाहिए, जिस में सिर्फ देवता ही सफल हो सकता हो।' यह सोच कर उसने दोनों को नजदीक बुलाया। एक का लोटा लिया और धरती पर रख कर बोला—'तुम दोनों में जो इस तंग मुँह वाले लोटे में पैर घुसा कर निकाल ले, वही इस स्त्री का पति है।' तब नकली शङ्कर याने नवमी-पुरुष ने सोचा—'वाह! यह भी कोई परीक्षा है। यह तो मेरे लिए बाँए हाथ का खेल है! चलो, यह भी अच्छा ही हुआ। लक्ष्मी मुझे मिल जायगी और अब इस जिद्दी शङ्कर को रुला-रुला कर छोड़ूँगा।' यह सोच कर उसने शङ्कर को परेशान करने के ख्याल से लोटे में तुरन्त

पैर घुसा दिया और आसानी से बाहर निकाल भी लिया। फिर खुशी से मुसकुराते हुए लक्ष्मी के पास आया और बोला—'आओ! अब साबित हो गया कि मैं ही तुम्हारा पति हूँ। अब किसी को कोई शक न रहेगा। फिर राजा और मन्त्री तो बड़े बुद्धिमान आदमी हैं।'

तब लक्ष्मी रोती-धोती उसके पाँवों से लिपट गई और बोली—'भगवन! आप जरूर कोई देवता हैं; मनुष्य नहीं! ऐसा असंभव कार्य मनुष्य कैसे कर सकते हैं? जरूर हम से अनजान में कोई चूक हो गई है और आप नाराज हो गए हैं। इसीलिए आप हमें इस तरह दंड दे रहे हैं!'

भोली-भाली लक्ष्मी का यों आंसू बहाना देख कर नवमी-पुरुष का हृदय पिघल गया और उसने निज-रूप में प्रत्यक्ष होकर कहा—'लक्ष्मी! भूल तुम ने नहीं, तुम्हारे पति ने की। उसने आज यात्रा करके मुझे नाहक गुस्सा दिलाया। इसलिए मैंने सोचा कि जरा उसे एक सबक सिखा दूँ।'

तुरन्त शङ्कर ने नवमी-पुरुष के पैरों पड़ कर माफी माँगी और बोला—'क्षमा करो देवता! अज्ञानवश मुझ से भारी चूक हो गई। फिर कभी ऐसी धृष्टता नहीं करूँगा।'

तब कहीं नवमी-पुरुष का गुस्सा ठण्डा पड़ गया और वह उन दोनों को आशीर्वाद देकर अदृश्य हो गया।

लक्ष्मी ने कहा—'बला टल गई! चलिए, अब आगे बढ़ चलें!' लेकिन शङ्कर ने मन ही मन काँप कर कहा—'नहीं, नहीं! चलो, लौट चलें। एक दिन में कुछ बिगड़ा नहीं जाता। कल तड़के उठ कर चल देंगे।' बस, वे दोनों उलटे पैर लौट गए। जमाई को बिटिया के साथ लौट आते देख कर बेचारे किसान और उसकी पत्नी को अचरज तो हुआ, मगर वे बहुत खुश भी हुए। दोनों ने सानंद उनका स्वागत किया।
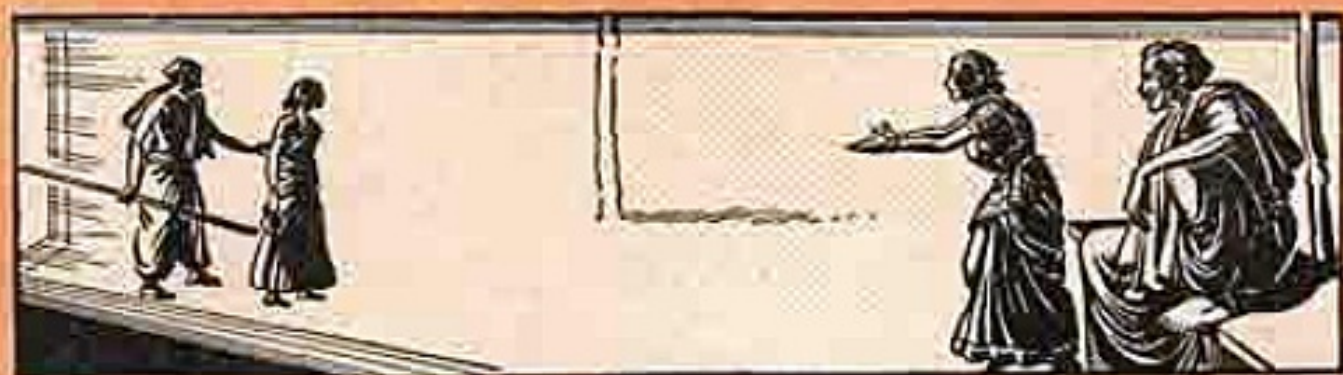
एक भलेमानुस ने अपने दोस्त से कहा—'मेरी गाय कहीं भटक गई है।' 'तो अखबार में इश्तहार क्यों नहीं दे देते?' दोस्त ने कहा। 'इस से क्या फायदा! वह तो अखबार नहीं पढ़ सकती।' उस भलेमानुस ने जवाब दिया।

—:—

एक लड़का दूसरे को देख कर बहुत हँस रहा था। 'क्यों भैया! क्यों खीस निपोड़ते हो? पहले भी कभी देखा था मुझे?' दूसरे लड़के ने खिसिया कर कहा। 'हाँ भैया! याद तो आता है कि चिड़ियाघर में देखा था।' पहले ने जवाब दिया।

—:—

'मेरे पिताजी हमेशा मोटर पर सैर करते हैं। कभी पैदल नहीं चलते।' एक लड़के ने कहा। 'तो वे बहुत पैसेवाले होंगे।' दूसरे लड़के ने यह सुन कर कहा। 'नहीं, वे ड्राइवर हैं।' पहले ने जवाब दिया।

—:—

नन्ही मुन्नी एक जगह बैठी रो रही थी। एक भलेमानुस ने यह देख कर पूछा—'क्यों बिटिया! क्या बात है?' 'कल सब को छुट्टी है। लेकिन मेरे लिए नहीं।' मुन्नी ने जवाब दिया। 'ऐसी बात! जब सब को छुट्टी मिली तो तुम्हें क्यों नहीं मिली?' उस भलेमानुस ने पूछा। 'छुट्टी मिले कैसे? मैं तो स्कूल नहीं जाती।' मुन्नी ने कहा।

एक लड़के ने दूसरे से पूछा—'रामू! यह किसका बछड़ा है?' 'जहाँ तक मुझे मालूम है, यह एक गाय का बछड़ा है।' रामू ने जवाब दिया।

—:—

एक आदमी ने अपने दोस्त को बड़ी देर तक बातों में लगा रखा और कहा—'हाँ, और एक बात कहना तो भूल ही गया। भला बताओ तो, क्या कहना चाहता था?' 'शायद यही कि बड़ी देर हो गई। चलता हूँ अब!' दोस्त ने ऊब कर कहा।

—:—

इतिहास के अध्यापक ने पूछा—'बताओ तो, मुहम्मद गोरी को हिंदुस्तान पर चढ़ाई करने के लिए किसने उकसाया था?' चंदू ने जिसका मन और कहीं लगा हुआ था, झट चौंक कर कहा—'जी! मेरा कोई कसूर नहीं, मैं तो उस वक्त स्कूल में भी नहीं था।'

—:—

कुत्ते को भूँकता देख कर लड़का डर गया। 'डरो नहीं, जो कुत्ता ज्यादा भूँकता है वह काटता नहीं।' उसके पिता ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा। 'ठीक है, मगर यह बात इस कुत्ते को कैसे मालूम हो?' लड़के ने जवाब दिया।

—:—

'अध्यापक जी! भूसा कहाँ मिलता है?' भजाने पूछा। अध्यापक, जो उसके सवालों से तंग आ गए थे, बोले—'तुम्हारे जैसे लड़कों के मगज में।'

पूरा करो !

*

नीचे दाईं ओर ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं जिनमें हरेक के अंत में 'दार' आता है। समझ लो कि 'दार' के आगे जितने नुक्ते हैं उतने अक्षर गायब हैं। उन शब्दों को पूरा करो। पूरे शब्द का जो माने होता है वह बाईं ओर दिया गया है।

१. दानी— .दार

२. ताकतवाला— . .दार

३. पुलिस-कर्मचारी— . .दार

४. निर्भर— . . .दार

५. एक अफसर— . . . . .दार

६. बुद्धिमान— . . .दार

७. वैभववाला— . .दार

८. रसवाला— . .दार

९. दर्शन— .दार

पूरा न कर सको तो जवाब के लिए ५६-वाँ पृष्ठ देखो !

बताओ तो ?

*

१. तीन अक्षर, भारत का एक नगर। मुकुट के लिए मशहूर है। आखिरी अक्षर काट देने से ज्वाला बनता है। बीच का अक्षर काट देने से बिहार का एक शहर बनता है।

२. तीन अक्षर, दशरथ की छोटी रानी। इनके नंदन बहुत प्रसिद्ध हैं, राम के भाई और हिंदी के एक कवि के रूप में भी।

३. दो ही अक्षर, मगर बहुत सची है। बौद्धों का पवित्र स्थान; यहाँ के स्तूप बहुत प्रसिद्ध हैं।

४. छः अक्षर, वर देने वाला चाँद और एक प्रसिद्ध पुराना कवि भी है। रासो लिखा था इसने।

५. तीन अक्षर, भगवान का एक अवतार। पहला अक्षर काट देने से अर्थ होता है 'चित्त' दूसरा अक्षर काट देने से 'बाला' और तीसरा अक्षर काट देने से 'बार्या'।

बता न सको तो जवाब के लिए ५६-वाँ पृष्ठ देखो !

किसी समय पुलिन्द देश पर मणिसिंह नाम का राजा राज करता था। उससे राज के सब लोग बहुत घृणा करते थे। इसकी एक वजह थी। किसी ज्योतिषी ने उस राजा से कह दिया था कि तुम्हारे राज्य में जब जुड़वाँ पैदा होंगे तो तुम्हारा वंश निर्मूल हो जायगा। इस लिए उस राजा ने ऐलान कर दिया कि जिन-जिन के घर में जुड़वाँ पैदा हों वे आकर तुरंत सूचना दें।

कुछ लोगों ने ऐलान के मुताबिक आकर सूचना दी। राजा ने सूचना पाते ही उन जुड़वें बच्चों को मरवा डाला। अब राज के सब माता-पिता जुड़वों का नाम लेते ही काँपने लगे।

पुलिन्द देश के ही एक गाँव में देवराज और चंद्रा नाम के गरीब पति-पत्नी रहते थे। बेचारी चन्द्रा गर्भवती थी और उन दंपति को डर लग रहा था कि कहीं जुड़वें न पैदा हों। खास कर चंद्रा तो बहुत चिंतित हुई और कहने लगी—'हाय! इस राज में तो बाँझ ही भाग्यशालिनी है!'

आखिर देवराज ने किसी तरह धीरज धर कर पत्नी को भी समझाया। उसने घर का भेद किसी पर खुलने न दिया। प्रसव-काल निकट आने पर उसने अपनी बूढ़ी सास को बुला भेजा।

यह बुढ़िया राजा मणिसिंह के रनवास में नौकरानी का काम करती थी। राज-महल की नौकरानियाँ अकसर किले में ही रहती हैं, जिससे बुलावा आने पर जल्दी पहुँच जाएँ। इसलिए यह बुढ़िया भी राजा के किले में ही रहती थी।

जो सोचा था वही हुआ। बेचारी चंद्रा के जुड़वाँ पैदा हुए। एक लड़की और एक लड़का, जिनके नाम विजया और विक्रम रखे

धर्मदत्त मेहरा

गए। उन दोनों को वे दंपति गुप्त रूप से बड़े लाड़-प्यार के साथ पालने लगे।

इस तरह ज्यों ही उधर राज में जुड़वाँ पैदा हुए, त्यों ही राजा के मन में एक तरह की बेचैनी पैदा हो गयी। एक तरह का खटका पैदा हो गया, जो दिन दिन बढ़ता ही गया। आखिर राजा का खाना-पीना हराम हो गया। रोज रात को बुरे सपने आने लगे।

फिर तो राजा ने ज्योतिषियों को बुला कर इसका कारण पूछा। उन लोगों ने पोथी-पत्रे पलट कर कहा—"आपके राज में कहीं जुड़वाँ बच्चे पैदा हो गए हैं। इसी से आपके मन में इस तरह बेचैनी पैदा हो गयी है।"

तुरंत राजा ने सारे राज में ढिंढोरा पिटवा दिया—'इस राज में कहीं जुड़वाँ पैदा हो गए हैं। जो उनका पता लगा कर राजा को सूचना देगा, उसे मुँह-माँगा इनाम मिलेगा।" यहाँ तक कि देवराज जिस गाँव में रहता था उस गाँव में भी यह ढिंढोरा सब ने सुन लिया।

अब बेचारे देवराज का दिल दहल गया। लेकिन साहसी होने के कारण उसने हार नहीं मानी। किसी तरह अपनी पत्नी को समझा-बुझा कर, वह बेटे विक्रम को साथ लेकर घर से भाग निकला।

अनेकों कष्ट उठा कर देवराज अपने लड़के के साथ आखिर किसी तरह उत्कल-राज्य पहुँच गया। उत्कल एक छोटा सा प्रदेश था जिसका शासक पुलिंद के राजा को कर चुकाता था। उत्कल के राजा के बारह साल का एक लड़का था। देवराज का लड़का भी उसी का हम-उम्र था। जब देवराज ने उस राजा के यहाँ नौकरी कर ली तो इन दोनों में बड़ी मित्रता हो गई। यहाँ तक कि दोनों एक दूसरे से बिछुड़ कर पल

भर भी रह न सकते थे। उधर उत्कल का राजा भी देवराज पर बड़ी कृपा रखता था। इसलिए उसकी बहुत जल्दी तरक्की हो गई। कुछ ही दिन में देवराज अपनी चतुरता और वीरता से राजा को प्रसन्न करके उसका प्रधान सेनापति बन गया।

* * *

अब जरा उधर पुलिन्द में देवराज की पत्नी और बेटी का हाल सुन लीजिए!

पति के चले जाने के बाद चंद्रा से अकेली न रहा गया। वह अपनी बिटिया को लेकर माता के पास चली गई और किले में रहने लगी।

बेचारी बुढ़िया की जान आफ़त में पड़ गई। पानी में रह कर मगर से बैर! लाड़ली नातिन की जान अब कैसे बचाई जाय? कहीं भेद खुल गया तो!

लेकिन बुढ़िया बहुत समझदार थी। वह नातिन को पुरुष-रूप में पालने लगी। सब से कहती—'यह मेरा नाती विजय है।' कुछ दिन बाद सब लोग उसे लड़का ही समझने लगे। किसी को शक भी न हुआ कि वह लड़की है।

एक बार विजया अपनी नानी के साथ रनवास में गई। वहां उसने अपनी जिन्दगी में पहली बार एक आदम-कद आइना देखा। उस बेचारी ने तब तक कभी आइना न देखा था। उसे भान तक न था कि आइना होता कैसा है!

इसलिए जब उसने पहली बार आइने में अपने-आप को लड़के के भेष में देखा तो चिल्लाई—'भैया! भैया!' उसकी आवाज एक नौकरानी ने सुन ली। वह दरवाजे की आड़ में खड़ी होकर देखने लगी कि क्या हो रहा है!

इतने में उधर से विजया की नानी आ गई। वह अपनी नातिन की नादानी समझ

गई। उसने तुरन्त उससे सारा भेद खोल दिया और कहा—'तुम जुड़वाँ हो और लड़की हो! तुम्हारा भाई दूसरी जगह पल रहा है। इस राज में जुड़वों की खैर नहीं, इसीलिए तुम लड़के के भेष में पल रही हो!' उसने चेता भी दिया कि यह भेद किसी को मालूम होने न देना चाहिए।

नौकरानी जो दरवाजे की ओट खड़ी खड़ी सारी बातें सुन रही थी, दौड़ी गई और जाकर राजा से सारा हाल सुना दिया। तुरंत राजा ने बुढ़िया और उस की मालिन को पकड़ लेने का हुक्म दिया। वह उनको सताने और पूछने लगा कि 'बताओ! दूसरा बच्चा कहाँ है?' बुढ़िया ने बहुत यन्त्रणा भोगी। लेकिन नाती का पता नहीं बताया। आखिर निर्दई राजा ने उसे मरवा डाला।

बुढ़िया और विजया के गिरफ्तार होते ही चन्द्रा भाग गई थी। वह बहुत से कष्ट सहने के बाद आखिर उत्कल-राज पहुँच गई और पति और पुत्र से मिल कर अपने सारे दुख भूल गई।

इधर पुलिन्द के राजा ने विजया को भी बहुत सताया। लेकिन वह बेचारी कुछ भी न बता सकी। वास्तव में वह अपने भाई का पता जानती भी न थी। आखिर राजा ने कुछ सोच-विचार कर उसकी लिखावट ले ली। फिर उसने चारों ओर भेदिए भेज दिए कि 'जाओ और ढूँढ कर ऐसी लिखावट वालों का पता लगाओ!'

यों कुछ दिन बीत गए। भेदियों ने सारा राज छान डाला। लेकिन एक भी ऐसा आदमी न मिला, जिसकी ठीक वैसी ही लिखावट हो।

राजा धीरे धीरे हार मान चला था कि एक दिन उत्कल-राज से एक दूत दरबार में आया। उसने राजा को एक चिट्ठी दी। राजा ने जब चिट्ठी खोल कर देखी

तो लिखावट हू-ब-हू विजया की सी थी। उसे बहुत आश्चर्य और आनन्द भी हुआ।

यह उत्कल के राजा की चिट्ठी थी और उस में लिखा था—'राजन! हम अस्सी गाड़ियों पर बोरों में भर कर अशर्फियाँ भेज रहे हैं। यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें और इस दीन पर कृपा बनाएँ रखें!"

राजा यह संदेश पढ़ कर बहुत खुश हुआ। उसने कहा—'बहुत अच्छा! हाँ, यह चिट्ठी जिसने लिखी, उसे भी साथ भेज देना। हम उससे मिलना चाहते हैं।' यह उत्तर पाकर दूत चला गया।

कुछ दिन बाद अस्सी गाड़ियाँ उत्कल देश से आईं और पुलिंद के किले के बाहर ठहरीं। तुरन्त राजा को खबर भेजी गई। राजा कुछ सिपाहियों को साथ लेकर स्वयं उत्कल-राज की भेंट स्वीकार करने आया। वास्तव में वह उस लिखावट वाले वीर को देखना चाहता था जो उसकी जिन्दगी और मौत का सवाल तय कर सकता था।

पहली गाड़ी से जो जवान उतरा वही विक्रम था। उसने राजा को सादर प्रणाम किया। उसे देखते ही राजा के मुँह पर स्याही फिर गई।

विक्रम विजय से बिलकुल मिलता-जुलता था। दोनों में कोई अंतर न था!

आखिर राजा ने किसी तरह अपने-आप को सम्हाला और विक्रम से उत्कल के राजा की कुशल पूछी। उधर उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि विक्रम को मार डालने से उसका खटका दूर हो जायगा। इसीलिए जब विक्रम ने अशर्फियों के बोरे उतारने की इजाजत मांगी तो राजा ने 'हाँ' कह दिया और उधर चुपके से अपने सिपाहियों को इशारा कर दिया कि 'इसे पकड़ लो!'

सिपाही आगे बढ़े ही थे कि अचानक बोरों को चीर कर, अस्सी गाड़ियों में से

सैकड़ों वीर कूद पड़े। सभी के हाथों में नंगी तलवारें चमचमा रही थीं। पल भर में राजा के सभी सिपाही धूल चाटने लगे। इस गड़बड़ी में किसी ने राजा को भी मार डाला। यों अत्याचार की जड़ ही कट गई।

राजा मणिसिंह के मरने से उसके राज में किसी को अफसोस न हुआ। लोगों ने सोचा—'भला हुआ, जो पिंड छूट गया।' किले के निवासियों ने बड़े प्रेम से विक्रम और उसके साथियों का स्वागत किया। जब उन लोगों को मालूम हुआ कि विक्रम विजया का भाई है तो और भी खुशी हुई। उसकी वीरता और चतुरता की सभी प्रशंसा करने लगे। आखिर सब लोगों ने एकत्र होकर सोच-विचार किया और विक्रम को राजा बनाने की इच्छा प्रगट की। लेकिन विक्रम को यह मंजूर न हुआ। उसने कहा—'मैं उत्कल देश के राजा का सेवक मात्र हूँ। मैं राज्य-भार कैसे सम्भाल सकता हूँ? हाँ, आप लोगों की इच्छा हो तो उत्कल-राज को ही अपना राजा बना लें।' लोगों ने उसकी बात खुशी से मान ली। इस तरह विक्रम की चतुरता से उत्कल-राज्य स्वाधीन ही नहीं हुआ, बल्कि पुलिन्द जैसा विशाल राज्य भी उसमें सम्मिलित हो गया।

विक्रम की उदारता से प्रसन्न होकर उत्कल के राजा ने अपने बेटे को राजा बना दिया और विक्रम को उसका मन्त्री। कुछ दिन बाद बड़ी धूम-धाम के साथ विक्रम का उत्कल-राज की पुत्री से विवाह भी हो गया। इस तरह दोनों राज्यों के लोगों का नाता और भी मजबूत हो गया और सब लोग सुख से रहने लगे। जुड़वों के बारे में जो काला कानून था वह तो उठा ही दिया गया।

विक्रम ने अपनी नानी की कुरबानी की याद में एक भव्य भवन बनवा दिया। दूर दूर से लोग उसे देखने आने लगे और हर साल वहाँ एक मेला लगने लगा।

इधर-उधर की–

दियासलाई में दो हजार टन!

दो अमेरीकी खगोल-शास्त्रियों ने एक छोटे से सितारे का पता लगाया है, जो पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से जितना बड़ा है। यह छोटा सा तारा जिस पदार्थ से बना है वह इतना भारी है कि दियासलाई की डिबिया उससे भरने से उसका वजन एक हजार टन होता है। इस नए सितारे का वातावरण सिर्फ कुछ फुट ही गहरा है। लेकिन इसकी आकर्षण-शक्ति पृथ्वी से चालीस लाख गुना जोरदार है। इसलिए जिस आदमी का वजन पृथ्वी पर एक सौ पचास पौंड भर हो, उसका वजन उस सितारे पर कई लाख टन होगा।

जेब-खर्च नहीं!

चार सौ साल पहले आदमी जो पोशाकें पहनते थे, उनकी खोज करने में एक अमेरीकी फिल्म वेष-भूषा-विभाग के आदमी को एक अजीब बात का पता चला। उसे मालूम हुआ कि उन दिनों कपड़ों की जेबें नहीं होती थीं! कपड़ों में जेबें लगाई जाने लगीं सत्रहवीं सदी से! इसके पहले आदमी कोई चीज़ कहीं ले जाना चाहते तो बटुओं में ले जाते। उन दिनों बच्चों की जेबें नहीं होती थीं; और जब जेब ही नहीं तो फिर जेब-खर्च कहां से आए?

सजग मधु-मक्खियां!

जिस तरह हमें हवाई-जहाजों के हमले की चेतावनी पहले ही मिल जाती है उसी तरह मधु-मक्खियों को डाकू मधु-मक्खियों के आक्रमण की चेतावनी देने के लिए एक प्रणाली होती है। डा. सी. जी. बटलर, जिन्होंने मधु-मक्खियों के बारे में बहुत खोज की है, इस बात के साक्षी हैं। डा. बटलर का कहना है कि मधु-मक्खियों के छत्तों के द्वारों पर हमेशा पहरा नहीं रहता। पहरा तभी बिठाया जाता है जब कि उन्हें डाकू मधु-मक्खियों के उस तरफ आने की सूचना मिल जाती है।

गदहू और सियारू

[रामवचनसिंह 'आनन्द']

★

लगी खेत में हरी-भरी थीं ककड़ी न्यारी न्यारी,
बड़ी-बड़ी, हाँ मीठी-मीठी, कोमल-कोमल सारी।
पता लगा कर, एक दिवस तब, अच्छा मौका पाकर
गदहू और सियारू पहुँचे, धीरे आँख बचा कर !
किन्तु सियारू ज्योंही बढ़ कर चाह रहा था खाना,
बोला गदहू—' माल मनोहर मिला हमें है, माना !
पर देखो तो, है यह कितनी अच्छी रात सुहानी !
छिटक रही क्या वाह चाँदनी, कण-कण में मनमानी !
खाने को फिर खा लेंगे, यह समय नहीं आने को !
ऐसा मौका बना नाचने, झूम-झूम गाने को !'
'हाँ, हाँ,' कहा सियारू ने—'पर, सोच समझ लो इतना,
चोरी-चोरी आये हैं हम, डरते - डरते कितना !
कहीं तान सुन जाग उठेगा, सोते से रखवाला,
प्राणों पर आफत आएगी, होगा गड़बड़-झाला !
ठहरो, पेट पूज लें पहले, फिर तब जङ्गल जाकर
खूब राग आलापेंगे हम, खुशियाँ खूब मना कर !'
'छी ! छी !' बोले गदहू तब यों—' मूरख अरे सियारू !
राग-तान-लय तू क्या जाने, तू तो निपट गँवारू !
देखोगे, है भरी कण्ठ में मेरे खूब मधुरता,
छोड़ो बात, समय बीतता, लो मैं अब सुर भरता !'
इतना कह कर लगे झूमते गदहू फौरन गाने;
जग कर पहुँचा रखवाला झट, मोटी लाठी ताने !
भगे सियारू-राम, अन्त में गदहू-राम पिटाए;
रखवाले के कर से बेबस, बीसों डण्डे खाए !
फिर चिल्लाते, लाठी खाकर खिलखाते, खिखियाते,
भागे जान बचा कर अपनी, लँगड़ाते-लँगड़ाते !
मिला रात में जब सियार से, बोला वह मुसकाते—
'भैया ! खूब नाचते भी हो, नहीं गीत ही गाते !'

कई सौ बरस पहले फारस में एक महाकवि रहता था जिसका नाम फिरदौसी था। फिरदौसी ने 'शाहनामा' नाम का एक महा-काव्य लिखा है। इसे लिखने में उसे एक-दो बरस नहीं, पूरे तीस बरस तक कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी।

फिरदौसी के इस महा-काव्य में फारस के बादशाहों की जीवनियाँ हैं। इस काव्य के लिखने में उसे अपनी पूरी प्रतिभा का उपयोग करना पड़ा था। 'शाहनामा' में साठ हज़ार पद हैं। एक एक पद एक एक अमूल्य मणि है और एक से एक बढ़ कर है। कविता की मधुरता का तो कहना ही क्या? वास्तव में शाहनामा फारसी की कविता-कुमारी का मुकुट है। इसके रचइता की महानता का अंदाज लगाना भी मुश्किल है।

कहा गया है—'भूखे भजन न होइ गोपाला!' हरेक इन्सान को सब से पहले पेट की फिक्र करनी पड़ती है। बेचारा कवि भी पेट का ही गुलाम है। फिरदौसी को शाहनामा लिखने की प्रेरणा मिली थी मुहम्मद गजनी से। इस सुल्तान ने वचन दिया था कि वह कवि के एक एक पद के लिए सोने का एक सिक्का देगा। उसने कुरान की कसम खा कर कवि को अपनी बात पर विश्वास दिलाया था।

सुल्तान की बातों पर कवि ने पूरा पूरा विश्वास किया। उसने तीस साल तक रात-दिन मेहनत करके शाहनामा पूरा किया। इसकी एक बड़ी वजह भी थी। वह यह कि कवि की लाड़ली लड़की सयानी हो गई थी। कवि के मन में बड़ी इच्छा थी कि वह अपनी इकलौती लड़की का ब्याह किसी अमीर घराने में धूम-धाम से करे। इसलिए रुपए की उसे बड़ी जरूरत थी।

बेचारा फिरदौसी यह सोच कर निश्चिंत हो गया था कि सुल्तान उसे बहुत सा धन

जीवनलाल
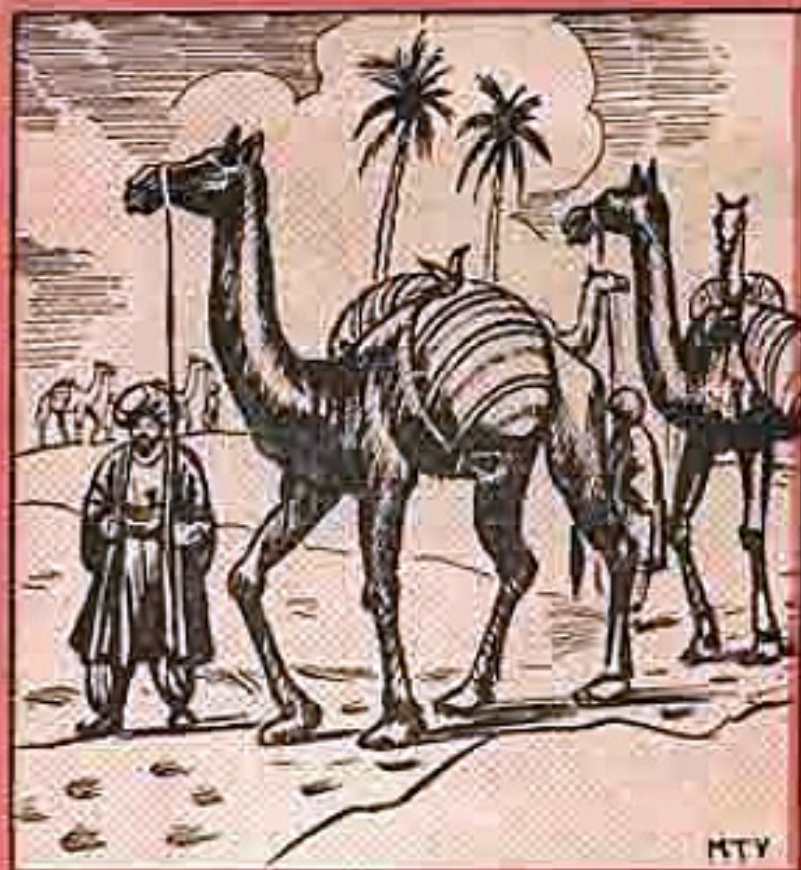
देंगे और उसकी इच्छा अवश्य पूरी हो जाएगी। इसी आशा में वह इतने दिन तक धीरज धर कर, शाहनामा जैसा लम्बा ग्रन्थ पूरा कर सका।

काव्य पूरा करते ही कवि ने सुल्तान के पास खबर भेजी। लेकिन हाय! इस बीच में सुल्तान की नीयत बदल गई थी। बहुत से दरबारी फ़िरदौसी से जलने लग गए थे। उन लोगों ने सुल्तान के कान खूब भर दिए थे। सुल्तान को अब फ़िरदौसी से पहले की सी मुहब्बत न रह गई थी। इसलिए काव्य पूरा होने की खबर पाकर, उसने अपने वचन के अनुसार, सोने के सिक्के भेजने के बदले, ऊँटों पर बोरों में लदवा कर चाँदी के सिक्के भेजे।

सुल्तान अपनी बात से क्या फिर गया कि कवि की आशाओं पर पानी फिर गया। जिसे अमूल्य रत्न समझा था, वह बस, काँच का एक टुकड़ा निकला। फ़िरदौसी शोक से पर-कटे पंछी की तरह धूल में लोटने और तड़पने लगा। शाहनामा में उसने जो जो नीति-वाक्य लिखे थे उन्हें पल में भूल गया। मर्माहत होकर वह सुल्तान को कोसने लगा।

जब चाँदी के सिक्के लदे ऊँट दरवाज़े पर पहुँचे तो कवि के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने उन बोरों के मुँह काट दिए और ऊँटों को मार-पीट कर खदेड़ दिया। चाँदी के टुकड़े जो अमूल्य कविता के बदले मिले थे, धूल में बिखर कर दमकने लगे।

फ़िरदौसी से अब एक क्षण भी वहाँ न रहा गया। वह अपनी लड़की को लेकर तुरन्त चल दिया और परदेश जाकर गरीबी में छुपे-छुपे जिंदगी बिताने लगा। बेचारा एक ही दाँव में सब कुछ हार बैठा था।

कुछ साल बाद सुल्तान मुहम्मद गज़नी को एक दुश्मन से लड़ने जाना पड़ा। उस लड़ाई में सुल्तान की ही हार होने लगी।

उसके सिपाही पीठ दिखा कर भाग चले। सुल्तान लाचार हो गया। आखिर उसने अपने वजीर को बुला कर पूछा कि 'अब क्या किया जाय!' तब वजीर ने एक शेर पढ़ा। उसका माने था—'युद्ध-क्षेत्र में जो हार नहीं मानता, दुश्मन का इन्तजार करते बैठा नहीं रहता, बल्कि आगे बढ़ कर खुद ही पहला वार करता है, उसी की अंत में जीत होती है।' यह शेर सुन कर सुल्तान बहुत खुश हुआ। उसकी रगों में नया जोश लहरें मारने लगा। उसने वजीर को हुक्म दिया—'जाओ! हाँक लगा कर उन भगोड़ों को लौटा लाओ।' वह खुद भी नये जोश से दुश्मनों को ललकार कर, जान की भी परवाह न करके जूझने लगा। इस तरह उसकी हार होते होते बच गई।

उस शाम को जब दुश्मन लोग सुस्ता रहे थे, गजनी ने अचानक उन पर धावा बोल दिया। वे बेचारे हड़बड़ा कर उठे। लेकिन वहाँ तलवार म्यान से निकालने तक का भी समय न था। पलक मारते-मारते गजनी ने मैदान मार लिया। यह सब उस शेर की करामात थी जो, उसने सबेरे वजीर से सुनी थी।

दूसरे दिन जब सब लोग जीत की खुशियाँ मना रहे थे, तो सुल्तान ने वजीर को बुला कर पूछा—'वजीर जी! कल आपने जो शेर सुनाया था, वह किसका लिखा हुआ है?' 'हुजूर! वह अभागे फिरदौसी के शाहनामा का शेर है! गुस्ताखी माफ हो! वह शेर भूल से निकल गया था मेरे मुँह से!' वजीर ने डरते-डरते जवाब दिया।

सुल्तान के मुँह पर काटो तो खून नहीं; ऐसा लगा जैसे किसी ने जोर से तमाचा मार दिया हो। वह सन्न-सा रह गया। कवि के प्रति कैसा अन्याय किया था उसने! दरबारियों के चकमे में

आकर कैसा अनमोल रतन गँवा दिया! सुल्तान ने लाज से सिर नीचा कर लिया। उसने झट बजीर को हुक्म दिया—'जाओ! सारा राज छान मारो और फिरदौसी को ढूँढ़ निकालो! साठ हजार सोनेके सिक्के ले जाओ और उनके कदमों में रख दो! और कहना—'बादशाह बहुत शर्मिंदा हैं और अपने किए की माफी चाहते हैं।'

बजीर ने तुरन्त साठ ऊँटों पर बोरों में सोने के सिक्के लदवा लिए और फिरदौसी की खोज में चला।

लेकिन जब तक उसे फिरदौसी का पता चला और वह अशर्फियाँ लेकर पहुँचा, तब तक बड़ी देर हो गई थी। उसके आने के पहले ही फिरदौसी, जो एक साल से बीमार था, चिंता से घुल-घुल कर चल बसा। पछताने से क्या फायदा! चिड़ियाँ खेत चुग गई थीं।

बजीर ने शोक में डूबी हुई फिरदौसी की लड़की से अशर्फियाँ लेने को कहा। लेकिन उसने इनकार कर दिया और बोली—'इस रुपए में कलंक लगा है! मैं इसे नहीं ले सकती। मैं इसे हाथ भी लगाऊँगी भी तो पिता की रूह को चैन न होगा। जाओ! इसे ले जाकर अपने सुल्तान को लौटा देना और कह देना कि इस खून सने रुपए से वही ऐशो-आराम करे!' इतना कह कर उसने मुँह फेर लिया। लाचार होकर बजीर सिक्के लेकर लौट आया।

गजनी ने यह खबर सुनी तो उस पर मानों बिजली गिरी। वह जाकर अपने बिस्तरे पर मुँह ढाँप कर पड़ रहा और चुपचाप आँसू बहाने लगा। ज्यों ज्यों उस अमर कवि की याद आती, त्यों त्यों उसकी छाती दहल उठती।

आखिर मुहम्मद गजनी ने 'तूस' शहर में फिरदौसी की याद में एक सराय बनवा दी। आज भी उस सराय का खण्डहर दिखाई देता है। उसे देख कर सब लोग कवि की याद करते और आँसू बहाते हैं।

मद्रास के त्यागराज-नगर मुहल्ले में सात और आठ नम्बर के दो अगल-बगल के घर हैं। इन में से एक में कामेश्वरी देवी रहती थी और दूसरे में सोमेश्वरी देवी। इन दोनों देवियों में हर बात में होड़ लगी रहती थी।

दोनों ही अपनी अपनी लड़कियों के जन्म-दिन मनाती थीं। एक अगर कागज़ के थैलों में मिठाई रख कर बाँट देती तो दूसरी अड़ोस-पड़ोस की सब औरतों को बुला कर धूम-धाम से खुशियाँ मनाती और मिठाई भरे कागज़ के थैले, कपड़ों के थैलों में रख कर बाँटती।

एक जब सौ रुपए की रेशमी साड़ी पहन लेती तो दूसरी यह देख कर झट एक सौ पचास की साड़ी पहन लेती। इस तरह दोनों अपना अपना बड़प्पन दिखा कर, आस-पास के रहने वालों पर रोब जमाना चाहतीं।

सात और आठ नम्बर के घर नए बनाए गए थे। आठवें नम्बर में बिजली लग गई थी। लेकिन सातवें नम्बर में अभी नहीं लगी थी। यही कामेश्वरी देवी का घर था।

बेचारी देवी को इस का बड़ा अफ़सोस रहता था। आठवें नम्बर में बिजली हो और सातवें में न हो! कितनी शरमकी बात थी!

ऐसे समय कामेश्वरी देवी के सिर पर और एक आफ़त टूट पड़ी! बात यह थी कि सोमेश्वरी देवी ने एक रेडियो ले लिया। बस, अब इस चिन्ता से घुल कर कामेश्वरी देवी दिन दिन दुबली होने लगीं। उनकी यह हालत देख कर पति ने झट एक गैस-लाइट और एक ग्रामोफ़ोन खरीद दिए। तब कहीं कामेश्वरी देवी के मन में ज़रा चैन हुआ। अब वे हर रोज़ शाम के चार बजे, अँधेरा होने के दो घण्टे पहले ही, गैस-लाइट जलाने लगीं।

ज्यों ही आठवें घर में रेडियो गाने लगता त्यों ही, वे चाहे कितने ही ज़रूरी काम में

माधव शर्मा

क्यों न लगी हुई हों, उठ कर फोन पर रिकार्ड चढ़ा देतीं। अड़ोस-पड़ोस की औरतें सोमेश्वरी देवीकी इज्जत करती थीं। यह कामेश्वरी देवी को बहुत खटकता था।

इतने में दशहरे के पर्व-दिन आए। उस गली में जितनी औरतें थीं सब ने एक जगह जमा होकर एक निश्चय किया। उन सब ने कहा—'हम सभी अपने अपने घर उत्सव मनाती हैं। इस से किसी के घर अच्छी धूम-धाम नहीं हो पाती। अच्छा हो, यदि इस बार सभी मिल कर ललिता देवी के घर उत्सव मनाएँ। इस से खूब धूम-धाम होगी और बड़ी चहल-पहल रहेगी। हम सब तो उस में भाग लेंगी ही।' उन सब का यह प्रस्ताव सोमेश्वरी देवी को अच्छा लगा। उन्होंने कहा —'यह अच्छा होगा!' तुरंत कामेश्वरी देवी ने हां में हां मिला दी—'मैं भी यही कहना चाहती थी!'

'तब तो सब कुछ ठीक हो गया! हां, सोमेश्वरी देवी जी! हमें आप से कुछ मदद चाहिए!' ललिता देवी ने कहा। तुरंत कामेश्वरी देवी के कान खड़े हो गए। 'और तो कुछ नहीं! आप का रेडियो चाहिए हमें इस मौके पर!' ललिता देवी ने कहा।

तुरंत कामेश्वरी मन ही मन घुलने लगी कि रेडियो देने की वजह से सब लोग सोमेश्वरी की बड़ाई करने लगेंगे और उन्हें कोई पूछेगा भी नहीं। वे सिर धुनने लगी कि सुनहरा मौका हाथ से निकल गया!

इतने में सोमेश्वरी ने कहा—'हमारा रेडियो तो बिगड़ गया है। बार बार कहती हूँ कि इसे ठीक करा लाइए! लेकिन वे सुनते ही नहीं, क्या करूँ!'

इतना सुन कर कामेश्वरी देवी फूली न समाईं। सोमेश्वरी देवी के जाते ही ललिता देवी से बोलीं—"देखा, कैसे साफ झूठ बोल गईं! कह दिया, रेडियो बिगड़ गया!

फिर आज सवेरे किस तरह गा रहा था !" यों झूठी निन्दा करके कहने लगीं—'अजी रेडियो न दिया तो बिगड़ा क्या ! ले लो हमारा ग्रामोफोन ! जो रिकार्ड चाहो बजा लो ! परसों भिजवा दूँगी नौकरानी के हाथ !' ललिता देवी धन्यवाद देकर चली गईं।

उसी रात संयोग-वश कामेश्वरी देवी के ग्रामोफोन का स्प्रिंग टूट गया। बेचारी घबड़ाईं और कहने लगीं—'हाय ! अब मैं क्या करूँ ! ललिता देवी से वादा किया था कि परसों ज़रूर भिजवा दूँगी !' वे पति को दिक करने लगीं कि 'जाइए! तुरंत इसे ठीक करा लाइए !'

लेकिन पतिदेव बोले—'अभी जल्दी क्या है ! देखा जाएगा !' अब बेचारी कामेश्वरी देवी बहुत बेचैन हो गईं। उस रात उन्हें अच्छी तरह नींद भी नहीं आई।

दूसरे दिन जब मरदों के दफ्तर जाने का समय हो गया तो सोमेश्वरी जी घर में ताला लगा कर कहीं चल दीं। कामेश्वरी ने यह देख कर सोचा—'भला, यह कहाँ जा रही है ?'

थोड़ी देर बाद एक मोटर आकर सोमेश्वरी देवी के घर के सामने रुकी। कामेश्वरी देवी ने गाड़ी की आवाज़ सुन कर बाहर आकर देखा तो दोपहर हो गई थी। कड़ी धूप थी। सारी गली सूनी पड़ी थी। इतने में सोमेश्वरी देवी के घर से दो-तीन आदमी एक रेडियो ढोते बाहर निकले। उन्होंने रेडियो उस मोटर में रख दिया।
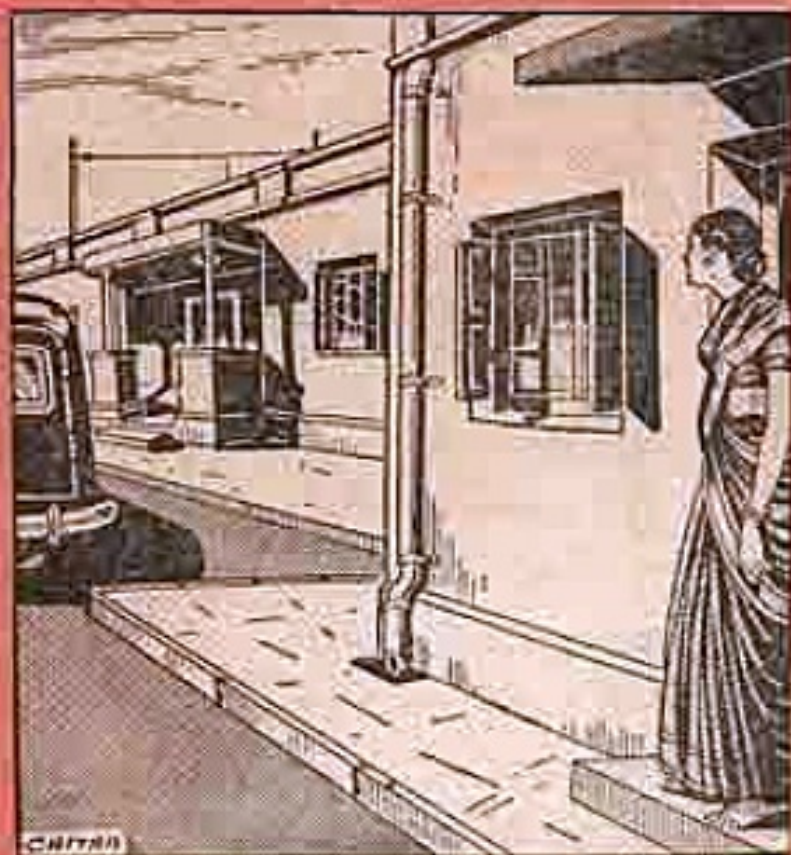
कामेश्वरी देवी ने यह सब देख कर सोचा—'तो बात यह है ! वह इन्हें भेज कर छुपे-छुपे रेडियो ठीक कराना चाहती है। बेचारी डर गईं कि ग्रामोफोन देने से मेरी साख बढ़ जाएगी ! नहीं तो इतनी जल्दी रेडियो ठीक कराने की क्या ज़रूरत थी !' तुरंत वे मोटर के नज़दीक गईं। जो आदमी मोटर में आए थे, वे इनको

देख कर भौंचक रह गए। कामेश्वरी देवी ने कहा—'तुम लोगों का भेद खुल गया! मुझसे बात छिपाने की कोई ज़रूरत नहीं। सोमेश्वरी ने तुम लोगों से छुपे-छुपे रेडियो ठीक कर लाने को कहा है न!'

थोड़ी देर तक उन लोगों के मुँह से बात न निकली। आखिर एक ने कहा—'जी! यही बात है! उन्होंने कहा—'यह भेद किसी को मालूम न हो! शाम तक रेडियो ठीक कर ला दो!"

तुरंत कामेश्वरी के मन में एक विचार दौड़ गया! उन्होंने पूछा—'तो तुम लोग रेडियो ही ठीक करते हो या ग्रामोफोन भी!'

'जी! ग्रामोफोन भी!' उस व्यक्ति ने कहा।

'तो सुनो! हमारा ग्रामोफोन बिगड़ गया है। उसे ठीक कर ला दो! रेडियो की मरम्मत तो धीरे धीरे होती रहेगी। मगर हाँ, ग्रामोफोन शाम तक ठीक हो जाना चाहिए! जो माँगोगे, सो दूँगी!' कामेश्वरी बोलीं।

तब वे लोग सोमेश्वरी जी के रेडियो के साथ साथ, कामेश्वरी जी का ग्रामोफोन भी लेकर जल्दी जल्दी चले गए।

शाम को जब सोमेश्वरी जी ने लौट कर घर का ताला खोला तो उन्हें रेडियो न दिखाई दिया। बस, दौड़ी-दौड़ी आईं और कामेश्वरी जी से बोलीं—'जी! कोई हमारा रेडियो उठा ले गया। मालूम होता है, किसी चाभी से ताला खोला लिया है। खैर, और कोई चीज़ छुई तक नहीं। हाय! अब पति-देव से क्या कहूँ!' यों वे रोने-धोने लगीं।

कामेश्वरी चुप रह गईं। आखिर बोलीं—'चोर थे वे लोग? शायद इसीलिए मुझे देख कर घबरा गए थे पहले! मेरी बेवकूफी देखिए! देखा-देखी ग्रामोफोन भी हाथों-हाथ देकर विदा कर दिया मैंने! इसी से कहते हैं—'बिना जाने-बूझे कोई काम नहीं करना चाहिए!' वे पछताने लगीं।

तेल पानी में क्यों नहीं मिल जाता ?

कुछ तरल पदार्थ बहुत जल्दी एक दूसरे में मिल जाते हैं, जैसे दूध और पानी। यह कैसे होता है? यह तो इसी से होता है कि उक्त पदार्थ के छोटे छोटे कण उस दूसरे पदार्थ के कणों से उसी तरह मिल सकते हैं जैसे अपने ही कणों से। इसका सब से अच्छा उदाहरण पानी का पानी में मिलना है। इसका दूसरा अच्छा उदाहरण होगा पानी का आल्कोहल से मिलना। क्योंकि दोनों के तरल कण एक दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं। लेकिन तेल और पानी की बात ही कुछ और है। इन दोनों के तरल कण एक दूसरे से भिन्न हैं। क्योंकि पानी के तरल कण तो बहुत छोटे-छोटे होते हैं और तेल के बहुत बड़े होते हैं। पानी के कण में तीन तीन ही अणु होते हैं; लेकिन तेल के कणों में बहुत से अणु होते हैं। इससे क्या होता है कि तेल के बड़े बड़े कणों को आपस में मिलने में जितनी सहूलियत होती है, उतनी पानी के छोटे छोटे कणों से मिलने में नहीं। उसी तरह पानी के छोटे छोटे कणों को भी तेल के बड़े बड़े कणों से मिलने में कठिनाई होती है और वे आपस में जुटना ही पसन्द करते हैं। इन कारणों से पानी में डालने पर भी तेल उससे मिलता नहीं। दोनों अलग अलग ही बने रहते हैं।

तीन प्रबल प्रहार—

जानवरों की दुनियाँ में तीन चीजों की चोट बड़ी जोरदार होती है। जानते हो, वे तीनों क्या हैं? एक तो ह्वेल मछली की पूँछ की चोट है। दूसरी जिराफी की लात है। तीसरी शेर के पंजे की चोट है। इन तीनों को सह कर जिन्दा रहना बहुत मुश्किल है।

मीठी मुसकान

हमने सुना है कि दक्षिण आफ्रिका के कुछ लोगों ने एक क्लब बनाया है, जिसका नाम है 'दुनियां के मुसकराने वाले'। इस क्लब का सदस्यता-शुल्क है एक मुसकान हर रोज। हमारी समझ में ऐसे क्लबों की संख्या दुनियां में जितनी ज्यादा हो उतना ही अच्छा।

भला मुसकान से बढ़ कर मनुष्य को आनन्द देने वाली चीज और क्या हो सकती है! इसीलिए तो लोग 'मीठी मुसकान' कहते हैं। हँस-मुख आदमियों को सब लोग पसन्द करते हैं। जो हमेशा मुँह लटकाए रहता है, उससे सब लोग चिढ़ते हैं। ऐसा आदमी अपने दुखों का बोझ सारे संसार पर लादना चाहता है। इससे विपरीत हँस-मुख आदमी सारे संसार के दुखों का बोझ अपने ऊपर ले लेना चाहता है।

मीठी मुसकान बहुत से रोगों की दवा है। यह घायल हृदयों पर मलहम का काम करती है। जिन्दगी की खुरदुरी सतह को यह चिकना बना देती है जिससे कोमल हृदय छिल न जाएँ। यह आदमी और आदमी के बीच एक प्रकार की हार्दिकता पैदा करती है। संकटों का पहाड़ सिर पर टूट पड़े, फिर भी मुसकराते ही रहना चाहिए। ऐसे लोगों की मुसकान साहस की द्योतक होती है। जो बहादुर हँसते हँसते सब कुछ झेल जाते हैं और माथे पर शिकन नहीं पड़ने देते, वे ही इस पृथ्वी को वास-योग्य बनाते हैं। अगर हरेक मनुष्य के हृदय की चिन्ता उसके मुख पर, साफ साफ लिखी दिखाई दे, तो फिर जीवन ही नरक बन जाए!

यह कोई नहीं कह सकता कि मुसकराने भर से सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि मीठी मुसकान मनुष्य का अमूल्य धन है!

प्रश्न-श्रृंखला का उत्तर–

१. असाम २. सामवेद ३. वेद-व्यास ४. व्यासङ्ग
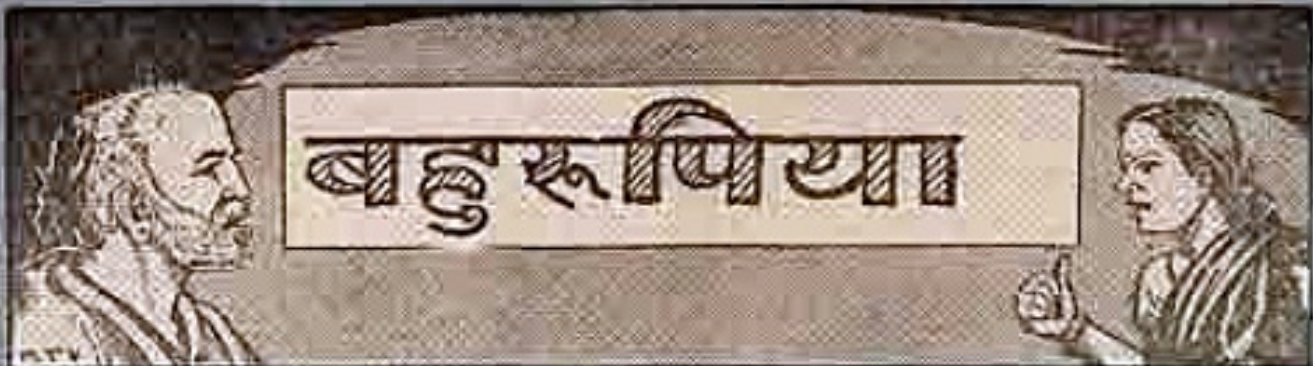
किसी समय बेनीपूर में बिसनराम नाम का एक बहुरूपिया रहता था। बिसनराम बहुत भोला-भाला आदमी था। उसके पिता और दादा रूप बदलने में बहुत चतुर थे। उन्होंने राजा को अपना कौशल दिखा कर बहुत सा धन ईनाम में पाया। लेकिन बिसनराम न रूप बदलना ही अच्छी तरह जानता था और न उतना चतुर ही था। फिर भी उसका लड़का किसनराम बड़ा होशियार निकला। सयाना होने पर वही कमा लाने लगा और बिसनराम घर बैठे-बैठे खाने लगा।

आखिर एक दिन उसकी पत्नी उससे बोली—'अजी! तुम हमेशा घर में क्यों बैठे रहते हो? क्यों नहीं राजा के पास जाते और कुछ मांग लाते? जाओ, राजा के पास जाकर हाथ जोड़ कर कहना—'हुजूर! घर में बाल-बच्चे दूध की एक एक बूँद को तरस रहे हैं। गुलाम को एक गाय दिला दें तो बड़ी कृपा हो!' पत्नी बोली।

बिसनराम उठ कर तुरंत राजा के यहाँ चला। उसने जाकर वही बात कह दी, जो उसकी पत्नी ने सिखाई थी। राजा ने कहा—'अच्छा जी! हमारी गोशाला में जाकर जो गाय तुम्हें पसन्द आए, ले जाओ!'

बिसनराम ने तुरंत जाकर एक अच्छी सी गाय चुन ली और हाँक कर घर ले चला। घर के नजदीक जाते ही पत्नी खुशी-खुशी बाहर आई। लेकिन तुरंत सर धुन कर कहने लगी—'अजी! यह क्या किया? मैंने कहा, गाय ले आओ! चुन ले आए बैल! अब क्या करोगे इसे यहां रख कर?'

'अच्छा, ऐसी बात! क्या करूँ, बड़ी मूर्खता हो गई! तुम्हीं बताओ, अब इसे ले जाकर मैं कहां छोड़ आऊँ?' भोले बिसनराम ने पूछा। 'इसे तुरंत ले जाकर

शंकर प्रसाद

किसी को बेच दो और रुपया ले आओ!' पत्नी झल्ला कर बोली। बिसनराम उस बैल को बेचने के लिए हाट की ओर चला।

रास्ते में उसे दो ठग दिखाई पड़े। उन्होंने बिसनराम को देखते ही जान लिया कि बड़ा भोला आदमी है।

'इसे बेचने के लिए हाट तक जाने की क्या जरूरत है? हमीं खरीद लेंगे इसे। क्या लोगे, बोलो?' एक ठग ने पूछा। बिसनराम ने सच-सच बता दिया—'मैं नहीं जानता।'

'तो चलो मेरे बाबूजी के यहाँ! बहुत तजुर्बा रखते हैं वे इन सब बातों में!' उस ठग ने कहा। तुरंत बिसनराम उसके साथ चल दिया। दूसरा ठग उसके पीछे पीछे बैल को हाँक ले चला। तीनों ठगों के घर जा पहुँचे।

उस बैल की कीमत कम से कम दो सौ रुपए होती। लेकिन ठग के पिता ने कहा—'चार रुपए से ज्यादा नहीं।' तुरंत पहले ठग ने चार रुपए बिसनराम को गिन दिए। जब बिसनराम रुपए टेंट में रख कर चलने लगा तो पहले ठग ने रोक कर कहा—'ठहरो भैया! मैंने तुम्हारा मामला यहीं फैसला कर दिया जिस से हाट में जाने की जरूरत नहीं पड़ी! कुछ बख्शीश दोगे कि नहीं मुझे?'

तब बिसनराम ने उसे एक रुपया दिया और चलने लगा। तब दूसरे ठग ने उसे रोक कर कहा—'वाह! भैया! तुम्हारा बैल मैं यहाँ तक हाँक ले आया! मुझे कुछ नहीं दोगे!' तब बिसनराम ने उसे भी एक रुपया दिया और चलने लगा। तब ठग के पिता ने उसे रोक कर कहा—'मैंने दिमाग लड़ा कर तुम्हारे बैल की कीमत बताई, यह क्या मुफ्त में? मुझे कुछ नहीं दोगे?' तब बिसनराम ने बाकी दोनों रुपए उसके हाथ में रख दिए और खाली हाथ घर लौट आया।
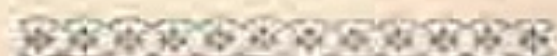
जब उसकी पत्नी ने उतावली के साथ आकर पूछा कि रुपया कहाँ है, तो उसने सारी कहानी सुनाई। वह बेचारी रोने-धोने लगी और कहने लगी कि 'कैसे बेवकूफ आदमी हो, ऐसे काम कैसे चलेगा?'

इतने में बेटा किसनराम घर लौटा। उसने पूछा—'बात क्या हुई?' सारा हाल जानने के बाद वह पिता को लेकर गया और ठगों का पता जान कर लौट आया। किसनराम बहुरूपिया तो था ही। उसने एक युवती का रूप बना लिया और चोरों की राह में बैठ कर रोने-धोने लगा। गला भी उसने ठीक औरत का सा बना लिया।

उसकी चाल चल गई। थोड़ी देर बाद एक ठग उस राह से आया। 'क्यों जी! क्यों रो रही हो?' ठग ने उस नकली औरत को देख कर पूछा। 'हाय! हाय! भगवान! यह तुमने क्या किया! पति-देव को बाघ उठा ले गया! अब मेरा कौन सहारा है?' किसनराम औरत की आवाज में रो-धोकर कहने लगा। तब ठग ने उसे धीरज बँधा कर कहा—'रोने-धोने से अब क्या फायदा! मैं तुमसे ब्याह कर लूँगा! तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न होने दूँगा! चलो मेरे साथ!' किसनराम घूँघट और भी जरा खींच कर, खाँस-खखार कर उसके पीछे पीछे चला। थोड़ी दूर जाने पर दूसरा ठग भी सामने से आया। 'यह औरत कौन है?' उसने पूछा।

पहले ठग ने सारा हाल कह सुनाया और सगर्व बोला—'यह मेरी होने वाली बीबी है!' तब दूसरे ने कहा—'ठहर भाई! जल्दी न कर! मैं तुमसे उमर में बड़ा हूँ। पहले मेरा ब्याह तो होने दो!' इतना कह कर वह झगड़ने लगा कि 'मैं ही इस औरत से ब्याह कर लूँगा।'

किसी तरह झगड़ते-झगड़ते दोनों औरत के रूप में किसनलाल को लेकर घर पहुँचे।

सारा हाल पिता से कह सुनाया। उनकी बातें सुन कर बूढ़ा बोला—'लड़को! तुम्हारी माँ के मरने के बाद मेरी बड़ी इच्छा थी कि दूसरा ब्याह कर लूँ! लेकिन कई कारण से आज तक नहीं कर सका। इसलिए इस औरत से मुझे ब्याह करने दो! जाओ! सभी इन्तजाम करो!' उसने कहा। इतने में किसनलाल जोर से 'हाय! हाय! मैं तो भूल ही गई।' कहने लगा।

तब दोनों ठगों ने पूछा कि बात क्या है?

किसनलाल बोला—'जब मेरे पति को बाघ उठा ले गया तो चोरों के डर से मैंने अपने गहनों की पोटली एक झाड़ी में छिपा दी। आते वक्त उसे उठा लाना भूल ही गई! अब क्या करूँ? कोई उठा ले गया तो?' उसकी बात सुन कर दोनों ठग तुरंत गहनों की पोटली ढूँढ़ लाने गए। किसनलाल ने उन्हें झूठ-मूठ की कुछ निशानियाँ बता दीं।

उनके चले जाने के बाद किसनलाल ने अपना घूँघट हटा दिया। मरद का मुँह देख कर बूढ़ा भौंचक रह गया। 'तो तू औरत नहीं?' वह कहने लगा। किसनलाल ने कोने में पड़ी हुई एक लाठी उठा ली और कहने लगा—'बूढ़े! मैं दुल्हिन नहीं; पुरोहित हूँ। दुल्हिन तो यह लाठी है। आओ! ब्याह का मजा तो चख लो!' यह कह कर उसने लाठी से बूढ़े को ठोंक-पीट कर दुरुस्त किया। बूढ़ा चिल्लाने लगा—'भैया! मुझे मारो नहीं! हाय! पैरों पड़ता हूँ! मारो नहीं!'

'भोले-भाले लोगों को ठग-ठग कर तू ने जो रुपया कमाया, वह सब कहाँ छिपा रखा है? बता अभी! नहीं तो'—किसनलाल ने फिर लाठी उठाई! बूढ़े ने काँपते हुए तुरंत रुपयों की गठरी लाकर किसनलाल को दे दी। किसनलाल वह गठरी लेकर उसके बेटों के लौट आने के पहले ही चम्पत हो गया।
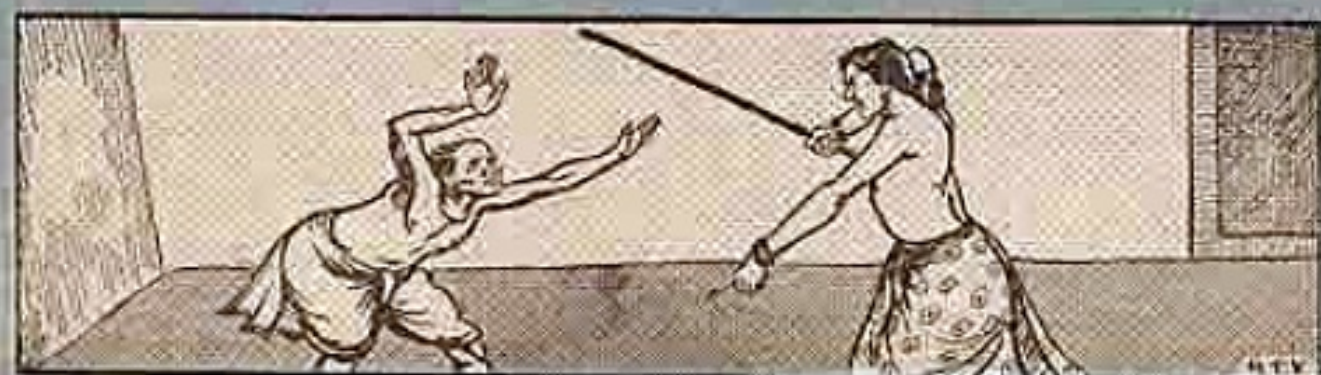
महादेवजी के डमरू-निनाद से संगीत का जन्म हुआ। भगवान शिवजी ने संकल्प किया कि इस संगीत का प्रचार सारे संसार में हो। साहित्य की देवी सरस्वती तो थीं ही। भगवान ने सोचा कि इसी तरह संगीत के लिए भी विशेष देवता नियुक्त हों। यह सोच कर उन्होंने नारद और तुंबुर को बुला कर दोनों को संगीत सिखलाया। उन्होंने सोचा कि तुंबुर स्वर्ग में संगीत का प्रचार करेंगे तो नारद पृथ्वी पर संचार करके उसे फैलाएँगे।

इसी निश्चय के अनुसार संगीत सीख लेने के बाद तुंबुर स्वर्ग में ही रह गए और नारद पृथ्वी पर उतर कर, घुम-फिर कर उसका प्रचार करने लगे।

कुछ दिन बाद इन दोनों में होड़ हो गई कि कौन बड़ा गवैया है। इस बात का निर्णय कराने के लिए वे साहित्य की देवी सरस्वती के पास गए। दोनों ने अपनी अपनी निपुणता दिखाई। दोनों का गाना सुन कर, सरस्वती असमंजस में पड़ गईं और बोलीं—'भैया! तुम दोनों ही बड़े गवैए हो।' लेकिन इससे किसी को संतोष न हुआ। इसलिए दोनों शिवजी के पास गए। बेचारे महादेव भी कुछ निर्णय न कर सके। हाँ, उन्होंने भी दोनों की प्रशंसा की।

असंतुष्ट होकर दोनों पार्वती के पास गए। गाना सुन लेने के बाद पार्वतीजी ने भी दोनों को सराहा। लेकिन जब इससे किसी को संतोष न हुआ तो वे बोलीं—'संगीत के पण्डित हैं हनुमानजी। आजकल वे विंध्याचल पर रहते हैं। तुम दोनों उनके यहाँ जाकर अपना अपना कौशल दिखाओ! वे जरूर निश्चय कर देंगे कि तुम दोनों में कौन बड़ा गवैया है।'

बस, तुंबुर और नारद दौड़े दौड़े विंध्याचल पर गए और बेचारे हनुमानजी

कुमारी रमा

को ध्यान से जगाया। 'हनुमानजी! हमने सुना है कि आप संगीत के बड़े पण्डित हैं! हम दोनों अभी आपको अपना अपना गाना सुनाएँगे। फिर आपको निर्णय करना पड़ेगा कि दोनों में कौन बड़ा गवैया है।' उन्होंने हनुमान से विनती की।

तब हनुमान ने मुसकुरा कर जवाब दिया—'वाह! इतनी सी बात के लिए स्वर्ग से दौड़े आए हो? अच्छा! लाओ इधर अपनी अपनी वीणा!' तुरन्त तुंबुर ने अपनी 'कलावती' नाम की वीणा और नारद ने अपनी 'महती' नाम की वीणा हनुमान को दी। दोनों अब आँख फाड़ फाड़ कर देखने लगे कि जाने, हनुमानजी कौन सा चमत्कार करने जा रहे हैं। लेकिन हनुमानजी ने और कुछ नहीं किया। सिर्फ दोनों वीणाएँ दोनों हाथों में लेकर बजाने और गाने लगे।

ज्यों ही हनुमान ने गाना शुरू किया त्यों ही विंध्याचल की शिलाएँ पिघल कर पानी की तरह बह चलीं। थोड़ी देर में वहाँ एक नाला बह चला। हनुमान ने अचानक दोनों वीणाएँ उठा कर उस नाले में फेंक दीं। यह देख कर तुंबुर और नारद चीख पड़े। हनुमान का गान बंद हो गया। फौरन नाले में बहने वाला पत्थर का पानी जम गया और फिर से पत्थर बन गया।

देव-गायकों की दोनों वीणाएँ उस पत्थर की कारा में बन्द हो गईं। तब हनुमान ने कहा—'तुम दोनों सच्चे गवैए हो तो गा कर उस पत्थर को पिघला लो और अपनी अपनी वीणा ले लो।'

तुंबुर और नारद, दोनों ने यत्न किया। लेकिन यह उनसे न हो सका। तब हनुमान ने फिर से गा कर उस पत्थर को पिघलाया और वीणाएँ निकाल कर दोनों को दे दीं। फिर बोले—'तुम दोनों ही बड़े गवैए हो। विद्या का घमंड नहीं करना चाहिए।' तुंबुर और नारद शरमा कर चल दिए।

रंगीन चित्र-कथा, पहला चित्र

किसी समय एक देश था। उस देश के राजा के तीन लड़के थे। तीनों ही देखने में सुन्दर और बहुत चतुर थे। आखिर जब राजा बूढ़ा हो चला तो उसने सोचा—'मेरे बाद किसे गद्दी पर बिठाया जाय?'

बड़ा लड़का कान्तिसेन बुद्धिमान तो था, लेकिन जरा हठी था। दूसरे लड़के कमलसेन का मिजाज़ भी कुछ ऐसा ही था। दोनों बड़े गर्वीले थे। इसलिए लोग उन्हें ज्यादा पसंद नहीं करते थे। सब से छोटा कृपासेन सब से बहुत मिल-जुल कर रहता था। इसलिए सब लोग उसे चाहते थे। राज के सभी लोग मन ही मन भगवान से प्रार्थना करते थे कि कृपासेन ही राजा बने।

आखिर राजा ने इस विषय में मन्त्रियों से मशविरा किया। लेकिन वे बेचारे इस विषय पर क्या कह सकते थे? आखिर राजा को एक अच्छा उपाय सूझ गया। उसने तीनों लड़कों को बुला भेजा और उनसे कहने लगा—"बच्चो! मैं बूढ़ा हो चला। मेरे बाद तुम्हीं तीनों में से किसी को राज्य-भार सम्भालना होगा। मैं जानता हूँ, तुम तीनों एक से एक बढ़ कर चतुर हो। मैं तीनों को चाहता हूँ। इसलिए इस बात का निर्णय करना बड़ा कठिन है कि तुम तीनों में कौन राजा बने। फिर भी मैंने एक उपाय सोच निकाला है। तुम तीनों तीन दिशाओं में देशाटन करने जाओ। मैं तुम लोगों को एक साल की मोहलत देता हूँ। संसार का कोना कोना छान कर एक छोटे से पिल्ले की तस्वीर ले आओ, जिसे देख कर हँसी आ जाए। तीनों में जिसकी तस्वीर सब से छोटी होगी, उसे मैं यह राज दे डालूँगा।" राजा बोला।

तीनों राजकुमारों ने पिता का कहना खुशी से मान लिया। फिर बड़ा काले घोड़े पर, दूसरा नीले घोड़े पर और तीसरा सफेद घोड़े पर चढ़ कर रवाना हुए।

उस शहर के बाहर, सरहद पर एक पीपल का पेड़ था। वहाँ तक तीनों साथ साथ गए। वहाँ जाने पर एक दूसरे से बिदा लेकर, लौटने पर फिर वहीं मिलने का निश्चय करके, तीनों घोड़े दौड़ा कर आगे बढ़ चले।

चन्दामामा पहेली

बाएँ से दाएँ :

1. प्रकाश
3. शब्द
4. घर
6. नया युग
8. गरमी
10. दादा के पिता
13. शरीर
14. अधम
15. विरक्त
16. कमी
17. भीख

ऊपर से नीचे :

1. आग
2. माने
4. दौड़ना
5. रोग का निर्णय
7. पाप
9. पिता के पिता
11. जवाहर
12. बचा हुआ
14. राज
15. सुबह
16. अमावस
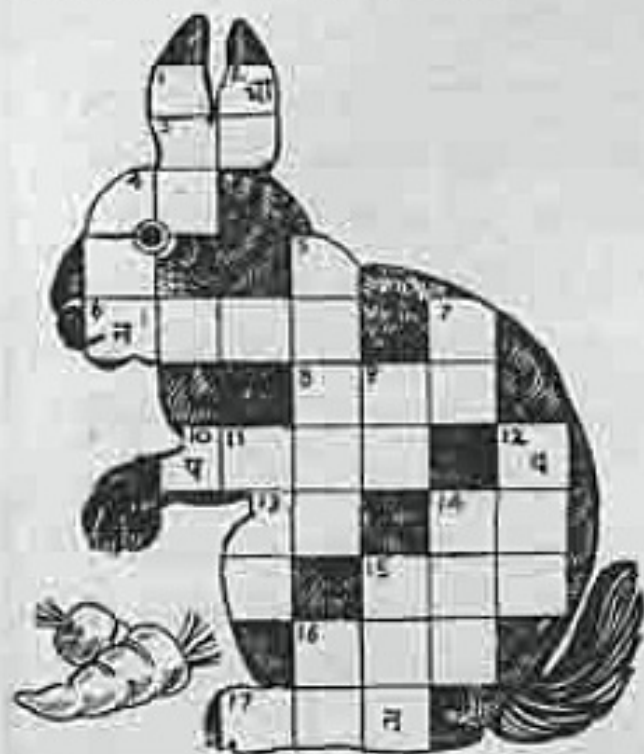
फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च - प्रतियोगिता - फल

*

मार्च के फोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १०) का पुरस्कार मिलेगा।

परिचयोक्तियाँ :

पहला फोटो : भाग्य - भोक्ता
दूसरा फोटो : भाग्य - वक्ता

प्रेषक : रमेशचन्द्र सिंह कानपूर

ये पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ प्रेषक के नाम-सहित मार्च के चन्दामामा में प्रकाशित होंगी। मार्च के अङ्क के प्रकाशित होते ही पुरस्कार की रकम भेज दी जाएगी।

अप्रैल की प्रतियोगिता के लिए बगल का पृष्ठ देखिए।

एक अनिवार्य सूचना :

परिचयोक्तियाँ बगल के पृष्ठ के कूपन पर ही लिख कर भेजनी चाहिए। तीन पैसे का स्टाम्प लगा कर बुक-पोस्ट में भेजी जा सकती हैं। साथ में कोई चिट्ठी न हो।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अप्रैल १९५३ :: पारितोषक १०)

★ ऊपर के फ़ोटो अप्रैल के अङ्क में छापे जाएँगे। इनके लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए।

★ परिचयोक्ति फ़ोटो के उपयुक्त हो। तीन-चार शब्द से ज्यादा न हों। पहले और दूसरे फ़ोटो की परिचयोक्तियों में परस्पर सम्बन्ध हो।

★ परिचयोक्तियाँ, पूरे नाम और पते के साथ कूपन पर ही लिख कर भेजनी चाहिए। १०-फरवरी के अन्दर ही हमें पहुँच जानी चाहिए।

★ प्राप्त परिचयोक्तियों की सर्वोत्तम जोड़ी के लिए १०) का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ परिचयोक्तियाँ भेजने का पता:

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास-२६.

→ चन्दामामा - फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता - कूपन ←

पहले फ़ोटो की परिचयोक्ति ....

दूसरे फ़ोटो की परिचयोक्ति ....

भेजनेवाले का नाम ....

पूरा पता ....

जादू का डिब्बा

[विजयमोहन, रोहतक]

लो, परदेश से मव्वा आए !
जादू का इक डिब्बा लाए !
देखो, डिब्बा बोल रहा है !
कानों में रस घोल रहा है !

चाबी को जिस समय घुमाया
डिब्बे ने बस, गीत सुनाया,
'हम देहली से बोल रहे हैं'
सुनने वाले डोल रहे हैं !

मीठे मीठे गीत सुनाता !
देस देस की बात बताता !
दुनिया भर की खबरें सुन लो !
खेल-कूद की बातें सुन लो !

यह डिब्बा जब थक जाएगा,
तब चुपके से सो जाएगा।
घर घर में इसकी चरचा है।
बूझो तो यह डिब्बा क्या है !

'पूरा करो' का जवाब :

१. उदार २. जोरदार ३. थानेदार
४. दारोमदार ५. तहसीलदार ६. समझदार
७. शानदार ८. चौकीदार ९. दीदार

'बताओ तो ?' का जवाब :

१. आगरा २. सुमित्रा ३. साँची
४. चन्दबरदाई ५. वामन

चन्दामामा पहेली का जवाब :
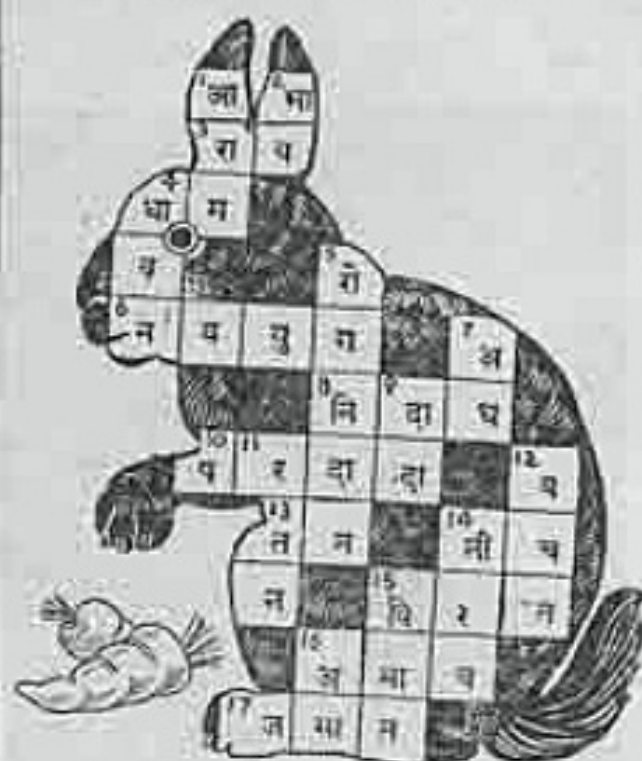
पिछले महीने के चन्दामामा के ८-वें पृष्ठ में जो चित्र छपे थे, उन में गलतियाँ :

१. पलकों के ऊपर भौंहें होनी चाहिए।
२. मिनटों की लकीरें होनी चाहिए।
३. पेन्सिल की पिछली ओर कार्बन का धब्बा होना चाहिए।
४. फ्रेम और शीशों को जोड़ने वाली स्क्रू होनी चाहिए।
५. गुलाब की टहनी में गुलाब के ही पत्ते होने चाहिए।
६. पानी की सतह गोलाकार दीखनी चाहिए।
७. गधे की पूंछ और लम्बी होनी चाहिए।
८. मगर की और दो टाँगें होनी चाहिए।
९. गाय के और दो थन होने चाहिए।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras 26, and Published by him from Chandamama Publications, Madras 26. Controlling Editor : SRI CHAKRAPANI

Photo by T. Kasinath

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

चिन्मय

प्रेषिका :
तारामणि पारीक, रतनगढ

रङ्गीन चित्र-कथा, चित्र – १